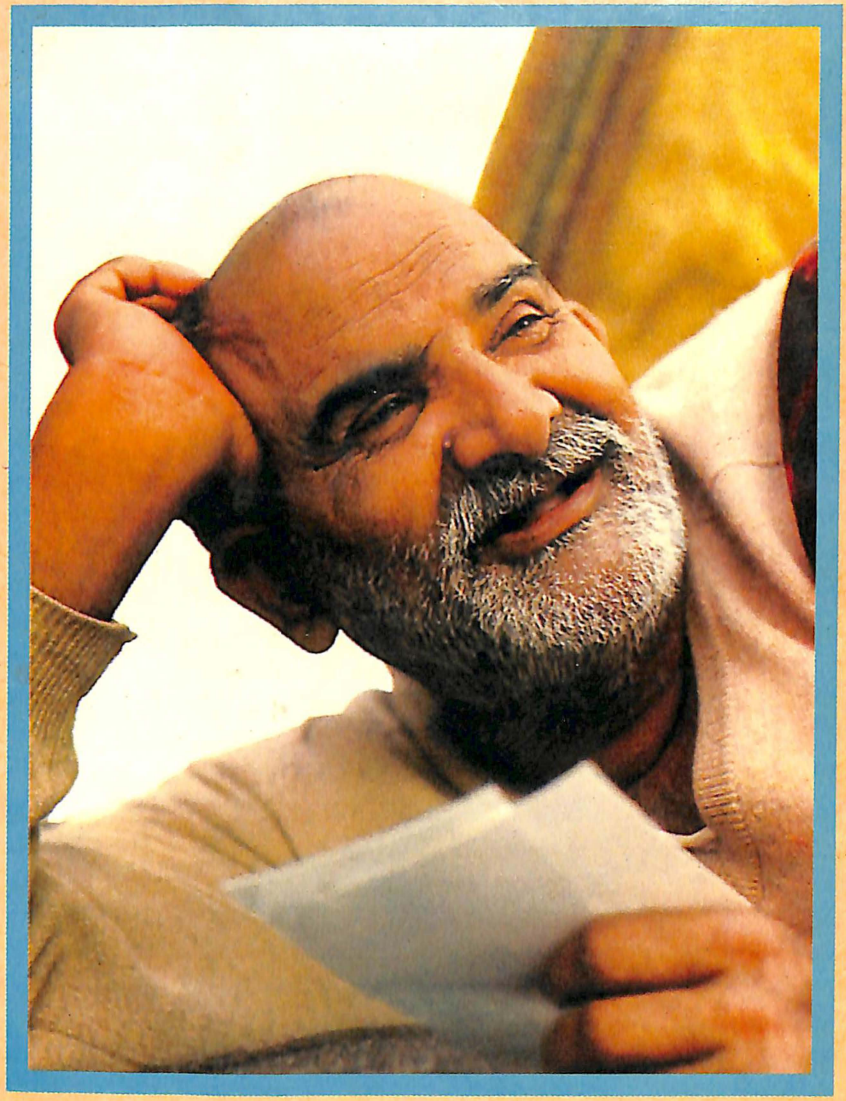

H
294.572 K 143 N

करौरी के बाबा

ाथ कपूर • परीक्षित कुमार चोपड़ा

H
294.572
K143N

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

बीसवीं शती के सिद्ध महापुरुष

नीब करौरी के बाबा

बदरीनाथ कपूर
परीक्षित कुमार चोपड़ा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

NIB KARORI
KE
BABA

by
Badrinath Kapoor
&
Parikshit Kumar Chopra

2004

ISBN : 81-7124-110-7

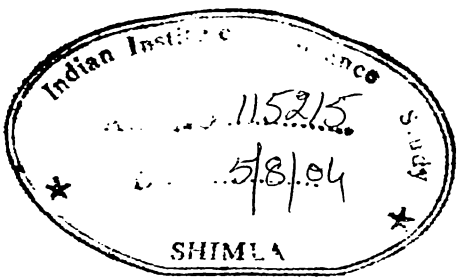

द्वितीय संस्करण : २००४ ई०

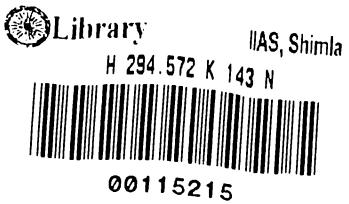

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२१ ००१
फोन व फैक्स : (०५४२) २४१३७४१, २४१३०८२
E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

मुद्रक
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
चौक, वाराणसी-२२१ ००१

दो शब्द

घोर कलियुग की इस बीसवीं शताब्दी में भी भारत भूमि पर अनेक ऐसे संत-महात्माओं ने जन्म लिया जिनका मूल उद्देश्य संभवतः मानव समाज का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपकार करना ही था । ऐसे संत-महात्माओं को इसीलिए अवतारी पुरुष कह सकते हैं क्योंकि इन्होंने भगवान राम और कृष्ण की ही तरह पृथ्वी का भार हल्का किया और अपने भक्तों का असीम उपकार किया ।

वैसे तो बाबा का विराट् स्वरूप है इनके लीला-कौतुक भी अगणित हैं, इन पर साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तो भी हमें बाबा की जिस छवि के दर्शन हुए तथा इसके फलस्वरूप जो सुख प्राप्त हुआ उसका कुछ अंश ही सही अपने पाठकों तक पहुँचाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं ।

सिद्धि माँ की असीम कृपा की अनुभूति हम इस क्षण प्रत्यक्ष रूप से कर रहे हैं । उन्हीं के आशीर्वाद से यह प्रयास संभव हुआ है ।

हम उन महानुभावों के प्रति भी आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं जिनके संस्मरणों का उल्लेख हमने इस पुस्तिका में किया है ।

बदरीनाथ कपूर
परीक्षित कुमार चोपड़ा

अनुक्रम

		पृष्ठ
१.	हमारे महाराज नीब करौरी के बाबा	१
२.	अमृत-वचन	६
३.	संस्मरण	१६
४.	अंतिम लीला	५४
५.	मंदिरों तथा आश्रमों की स्थापना	५६

हमारे महाराज नीब करौरी के बाबा

वे मानव भी थे, देवता भी और ईश्वर भी । उन्होंने इस धरती पर विचरण किया इसलिए वे मानव थे । वे करुणा, दया तथा परोपकार की मूर्ति थे इसलिए देवता थे । वे अंतर्यामी और सर्वव्यापी थे इसलिए ईश्वर थे । सामान्य जन उन्हें हनुमान जी का अवतार समझते थे । कुछ भक्तों ने महाराज जी में हनुमान जी के दर्शन तो किए ही थे कुछ ने उनके मुखारविंद से भी कुछ अद्‌भुत बातें सुनी थीं । रामायण लेकर बैठे हुए एक भक्त ने जिज्ञासा की कि महाराज जी कौन-सा प्रकरण सुनाऊँ तो महाराज जी ने उत्तर दिया : "वह प्रसंग सुनाओ जब मैं विभीषण से बातें कर रहा था ।" सच तो यह है कि उनका अपना कोई रूप नहीं था । वे किसी प्रकार की पूजा या कर्मकाण्ड नहीं करते थे । वे किसी परम्परावादी प्रथा का भी पालन नहीं करते थे । परन्तु उनकी उपस्थिति ही अत्यन्त प्रेरणादायक तथा उद्‌बोधक होती थी ।

उनका विशाल और ज्योर्तिमय स्वरूप था । उन्नत ललाट था । बड़ी-बड़ी आँखे थीं । नुकीली लंबोतरी नासिका थी । ऊँचे खड़े कन्धे थे । चौड़ा वक्षस्थल था, लम्बी बाँहे थीं । धोती ही उनका वस्त्र था । ऊपर से कंबल लपेटे रहते थे । बातें करते-करते वे खो जाते थे । संभव है कि किसी भक्त ने उन्हें याद किया हो और महाराज जी कहीं उसी के पास न पहुँच गए हों ।

महाराज जी का जन्म आगरा जिले के अकबरपुर गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में १९वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुआ था । घर का नाम लक्ष्मीनारायण शर्मा था । ग्यारह वर्ष की छोटी-सी अवस्था में वे घर से निकल पड़े, साधु वेश धारण कर लिया और अपनी साधना में जुट गए । कुछ भक्तों का कहना है कि बाबा अनेक वर्षों तक गुजरात में रहे और वहीं बाबनियाँ नामक ग्राम के निकट राम तालाब के भीतर निवास तथा साधना करते रहे । फिर कब उन्होंने उस स्थान को छोड़ा और कब फर्रुखाबाद जिले के नीब करौरी गाँव में आकर रहने लगे इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है ।

यहीं महाराज जी गाँव के बाहरी हिस्से में एक खेत में गुफा बनाकर रहते थे । यहाँ कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्हें सामान्य भाषा में चमत्कार कहा जा

सकता है । परन्तु जितने भी चमत्कार उनके नाम से जुड़े हैं उन सब के पीछे औरों के हित की भावना ही प्रमुख रही । वे सन्त थे और महान् सन्तों की तरह उनका उद्देश्य था मानव जाति का उपकार करना ।

उनकी गुफा से कुछ दूरी पर एक कुआँ था । एक दिन एक स्त्री वहाँ पानी भरने के लिए आई । वह पानी भर चुकी तो उसे देखकर महाराज जी की हँसी छूट गई । महाराज जी की हँसी अकारण थी और उसका विषय एक स्त्री था, इसलिए उपस्थित लोगों को वह हँसी कुछ नागवार सी लगी । उस स्त्री के पानी लेकर चले जाने के बाद एक भक्त ने साहस कर पूछ ही लिया कि महाराज जी आप उस स्त्री पर हँसे क्यों थे ? तो उन्होंने बतलाया कि वह स्त्री थोड़ी देर में पानी लेकर अपने घर पहुँचेगी और फिर उसका पति पानी पीने के लिए जैसे ही आगे बढ़ेगा, उसे साँप काट लेगा । कुछ क्षण बाद महाराज जी ने यह भी कहा कि यदि तुम लोगों में से कोई जाकर उसे पानी पीने से रोक दे तो उसकी जान बच जायेगी । फिर कुछ लोग वहाँ से दौड़ पड़े और उसके घर जा पहुँचे । वे जैसे ही पहुँचे उसका पति घड़े की तरफ पानी लेने बढ़ रहा था । उसे वहीं ठहरने के लिए कहा गया । तब उन लोगों ने वहाँ देखा कि घड़े के नीचे एक बहुत बड़ा काला नाग बैठा हुआ है ।

नीब करौरी गाँव की एक और घटना इस प्रकार है । एक दिन महाराज जी अपनी कुटिया से स्टेशन की ओर गये । स्टेशन वहाँ से लगभग छह-सात मील दूर था । गाड़ी आई और उसके प्रथम श्रेणी के डिब्बे में जा बैठे । गाड़ी चल पड़ी । थोड़ी ही देर बाद उस डिब्बे में टिकट चैकर आ पहुँचा । बिना टिकट प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे महाराज जी को देखकर वह कुपित हो उठा । उसने जंजीर खींची और गाड़ी रुक गई । जबरदस्ती उसने महाराज जी को गाड़ी से उतार दिया । लाइन के पास ही एक पेड़ था । महाराज जी उस पेड़ के नीचे जा बैठे । संयोग से यह स्थान नीब करौरी गाँव के पास ही था ।

फिर गार्ड ने सीटी बजाई और झंडी भी दिखाई । इंजन ने भी सीटी लगाई परन्तु गाड़ी आगे बढ़ न सकी । गाड़ी को चलाने का हर सम्भव प्रयास ड्राईवर ने किया परन्तु उसे इस कार्य में कुछ भी सफलता न मिली । फिर गाड़ी को खींचने के लिए दूसरा इंजन बुलाया गया परन्तु गाड़ी फिर भी न चल पाई । एक स्थानीय मजिस्ट्रेट भी उस गाड़ी पर सवार थे जो अंग्रेज थे । उन्होंने गार्ड और इंजन चालक से कहा कि आप महाराज जी से प्रार्थना करें और उन्हें फिर से गाड़ी में बैठने के लिए कहें । पहले तो उन्हें यह प्रस्ताव अच्छा नहीं

लगा परन्तु जब बार-बार प्रयास करने पर भी गाड़ी न चली तो उन्हें महाराज जी से प्रार्थना करनी ही पड़ी । अनेक यात्री तथा रेलवे अधिकारी फल और मिठाई हाथ में लिए उनकी सेवा में उपस्थित हुए और उनसे प्रार्थना की कि आप गाड़ी पर फिर से सवार हो जाएँ । महाराज जी ने उनकी बात तो मान ली परन्तु साथ ही दो शर्तें भी रखीं । पहली यह कि रेलवे अधिकारी नीब करौरी में रेलवे स्टेशन के निर्माण का वचन दें । इससे पहले उस गाँव के लोगों को कई मील पैदल चलकर पास के स्टेशन पर जाना पड़ता था । दूसरी शर्त यह थी कि रेलवे के अधिकारी साधु-सन्तों के प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करने का वचन दें । उन रेलवे अधिकारियों ने एक तरह से उनकी बातें मान लीं और कहा कि इस सम्बन्ध में वे अपने अधिकारों का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे और बड़े अधिकारियों को इसके लिए राजी करेंगे । महाराज जी फिर गाड़ी में बैठ गए । लोगों ने उनसे कहा, 'महाराज जी गाड़ी चलाइये ।' इस पर वे बहुत क्रुद्ध हुए और कहने लगे, 'मेरे पास क्या है जो मैं गाड़ी चलाऊँ ।' फिर इंजन ड्राईवर ने गाड़ी चलाई । अभी गाड़ी कुछ कदम आगे बढ़ी ही थी कि ड्राईवर ने फिर गाड़ी रोक दी और कहने लगा कि जब तक महाराज जी मुझे आदेश नहीं देंगे तब तक मैं गाड़ी आगे नहीं ले जाऊँगा । महाराज जी ने कहा, 'चलो ले चलो' और फिर वह गाड़ी को आगे ले चला ।

बाद में महाराज जी ने कहा था कि अधिकारियों ने अपने वचन का पालन किया और नीब करौरी स्टेशन जल्दी ही बनवा दिया तथा साधु-सन्तों के प्रति भी रेलवे अधिकारी अधिक उदारतापूर्ण नीति बरतने लगे । कहते हैं कि तभी रेल विभाग ने व्यवस्था दी कि साधु-सन्तों से टिकट नहीं पूछा जाएगा और यह व्यवस्था निरन्तर पिछले पचास से अधिक वर्षों से चली आ रही है । महाराज जी लगभग अठारह वर्ष तक नीब करौरी गाँव में रहे । प्रति वर्ष वहाँ भण्डारे का आयोजन करते रहे जिसमें गाँवोंवालों का पूर्ण सहयोग रहता था ।

फिर महाराज जी फतेहगढ़ में गंगा तट पर कुछ समय तक वास करने के उपरान्त बराबर भ्रमण करते रहे । सम्भवतः १९४० के आस-पास वे नैनीताल में आए और यहीं उनके मन में हनुमान जी का मंदिर बनवाने की इच्छा उत्पन्न हुई । अब तक उनके भक्तों की संख्या में काफी वृद्धि हो चुकी थी । इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बरेली, हलद्वानी, फतेहगढ़, नैनीताल आदि में रहनेवाले भक्त महाराज जी की इच्छा की पूर्ति में जुट गए । पहले हनुमानगढ़ी में हनुमान जी का मंदिर बना । फिर इसके बाद भूमियाधार, कैंची, काकड़ी घाट आदि आस-पास के क्षेत्रों में भी कई हनुमान मंदिर बने । कानपुर, शिमला, दिल्ली, वृंदावन,

लखनऊ आदि में भी उन्होंने हनुमान मंदिर बनवाए । मंदिर बनवाने में महाराज जी का उद्देश्य यही था कि लोगों में भक्तिभाव उत्पन्न हो तथा लोग नाम-स्मरण की ओर उन्मुख हों ।

महाराज जी सच्चे संत थे । कभी लम्बे भाषण या व्याख्यान नहीं दिये और न कभी धर्म ग्रन्थों से हवाले ही दिये । उन्होंने सदा स्थितियों को ही उपदेश का आधार बनाया । हर बात थोड़े से शब्दों में या संकेत से समझा देते थे । उनका उद्देश्य भक्तों की प्रवृत्ति बदलना था उन्हें ईश्वरोन्मुख करना तथा परोपकारी बनाना था । वे कहते थे :

"यह सारी सृष्टि ईश्वर की ही सृष्टि है । सब की सेवा करो, भले ही वह चोर या ठग ही क्यों न हो । अगर वह तुम्हारे पास भूखा आता है तो उसे भोजन दो । हर व्यक्ति भोजन प्राप्त करने का अधिकारी है ।"

जब उनसे पूछा जाता था कि महाराज जी कौन सी साधना की जाए तो उनका उत्तर होता था :

"मानव मात्र की सेवा करने से ही तुम्हें मुक्ति मिल सकती है । तुम्हें न ध्यान करने की आवश्यकता है और न पूजा करने की । सभी जीवों की सेवा करो ।"

एक बार किसी भक्त ने पूछा कि महाराज जी भगवान को कैसे जाना जाए ? उन्होंने उत्तर दिया था,"गरीबों की सेवा करो ।" और जब उनसे यह पूछा गया कि गरीब कौन है तो उत्तर दिया, "प्रभु ईसा के सामने सभी गरीब हैं ।"

कई भक्तों को शराब पीने, सिगरेट पीने, माँस खाने आदि की आदत होती थी । महाराज जी ने उन्हें कभी मना नहीं किया । वे कहते थे, "ये उनकी आदत है । उन्हें इससे आनन्द मिलता है । मैं क्यों रोकूँ ।"

लोग जैसा करना चाहते थे महाराज जी उन्हें वैसा करने देते थे । वे कभी किसी से यह नहीं कहते थे कि तुम सिगरेट मत पियो या शराब मत पियो । वे इस सम्बन्ध में कभी कुछ कहते ही नहीं थे । परन्तु हाँ, वे ऐसी स्थितियाँ अवश्य उत्पन्न कर देते थे कि भक्त की बुरी लत आप-से-आप छूट जाए ।

एक मदिरासेवी भक्त के सम्बन्ध में महाराज जी ने टिप्पणी की थी, "यदि उसके सब मित्र पीते हैं तो ठीक है ।"

जब कभी कोई भक्त पूछ बैठता था कि "कामनाओं से मुक्ति कब होगी ?" तो महाराज जी कहते थे कि "जब समय सही होगा ।"

यह सत्य है कि अधिकतर भक्त महाराज जी के पास अनेक प्रकार की

समस्याएँ लेकर पहुँचते थे । ऐसा देखने में आता था कि इस तरह के आकांक्षी लोग उनके पास जब कुछ क्षण बैठ लेते थे तब उनकी सभी समस्याएँ आप-से -आप हल हो जाती थी । उनके सत्संग का अमृत एक बार चख लेने पर उसे चखने की पुनःपुनः इच्छा उत्पन्न होती थी ।

वे सर्व-समर्थ थे । हर एक के हृदय में बैठकर उसकी मंशा जान लेते थे और उसे पूरी भी कर दिया करते थे । पानी को दूध या पेट्रोल में बदल देते थे । स्थितियों या उनके परिणामों को क्षण भर में बदल देते थे । परन्तु महाराज जी यह भी कहते थे : "ईश्वर ही सब कुछ करता है, मैं कुछ नहीं कर सकता ।"

महाराज जी के सम्बन्ध में एक बात ध्यान रखने की यह है कि वे सदा आडंबरप्रिय लोगों से दूर ही रहते थे, उनसे मिलते नहीं थे या उनसे किनारा कर जाते थे । भीड़-भाड़ तथा समारोहों से भी दूर ही रहा करते थे । सच्चे सन्तों की तरह आत्म-प्रचार से भी कोसों दूर ही रहा करते थे ।

●

अमृत-वचन

गुरु को अपनी शिष्य की हर बात की जानकारी रहनी चाहिए ।

★★★

गुरु कभी अपने भक्त को त्यागता नहीं ।

★★★

गुरु अविनाशी, अमर तथा मृत्यु और जरा से परे होता है ।

★★★

यदि लगन अच्छी गहरी हो तो गुरु स्वयं खिंचा चला आता है ।

★★★

गुरु का शरीर से मिलन आवश्यक नहीं, गुरु बाहरी वस्तु नहीं ।

★★★

गुरु चाहे जैसा हो—वह पागल भी हो सकता है या साधारण व्यक्ति भी । यदि आपने उसे गुरु मान लिया है तो वह अधिपतियों का भी अधिपति है ।

★★★

मैं हर एक का गुरु हूँ ।

★★★

कपड़े को रँगना आसान है परन्तु अपने दिल को रँगना बहुत मुश्किल है ।

★★★

महाराज जी, भगवान को कैसे जाना जाए ?

—लोगों की सेवा करो ।

★★★

महाराज जी, मुझे आत्मबोध कैसे हो ?

—लोगों को खिलाओ ।

★★★

महाराज जी, कुंडलिनी को कैसे जागृत किया जाए ?

—लोगों की सेवा भी करो और उन्हें खिलाओ भी ।

★★★

भक्त ने फिर पूछा..... "गरीब कौन है ?" महाराज जी ने उत्तर दिया..... "प्रभु के सामने सभी गरीब हैं ।" एक बार महाराज जी ने कहा था : 'प्रत्येक मस्तिष्क की कुंजी मेरे हाथ में है । मैं उसे किसी भी दिशा में घुमा सकता हूँ ।'

★★★

महाराज जी ने कहा था : "वह हमारे जीवन में इतना घुला-मिला अंश है कि जब वह हमारे पास भी होता है तब भी हमें उसकी सामर्थ्य की अनुभूति नहीं हो पाती । वह अपनी महत्ता तथा श्रेष्ठता को छिपाए रखता है । हम लोग ऐसे किस्सों को सँजोते नहीं कदाचित हम समझते हैं कि वह ऐसे सदा हमारे साथ रहेगा ।"

★★★

चमत्कारी बाबाओं के सम्बन्ध में महाराज जी कहते थे : "यह क्या है ? यह सब पाखण्ड है"। वह (ईश्वर) चमत्कार कर सकता है । सबसे बड़ा चमत्कार तो यह है कि वह व्यक्ति का हृदय और मन अपनी ओर मोड़ लेता है । मेरा हृदय और मन अपनी ओर मोड़नेवाला भी वही है । महाराज जी ने एक बार कहा था : "यदि आपमें पर्याप्त विश्वास है तो आप अपनी धन-सम्पत्ति त्याग कर सकते हैं ।"

★★★

एक व्यक्ति ने महाराज जी से पूछा कि मैं कैसे साधना करूँ ? महाराज जी ने उससे कहा : "इसके सम्बन्ध में सिर खपाने की आवश्यकता नहीं, बस हनुमान जी की तरह राम-राम बार-बार जपा करो ।"

★★★

जैसी सेवा हनुमान जी ने की वैसी सेवा तुम भी करो । मैं संसार का पालक हूँ । पूरा संसार मेरे लिए बालकवत् है ।

★★★

शरीर छोड़ने के चार दिन पहले महाराज जी ने कहा : "माँ, मैं क्या करूँ । किसी में ऐसी दृष्टि नहीं जो मेरा अनुसरण करे । न कोई मुझे जानने वाला है और न ही कोई समझनेवाला । मैं करूँ भी तो क्या ?"

★★★

महाराज जी ने कहा था : "महान साधुओं का मानव शरीर नहीं होता । वे सर्वव्यापक होते हैं । यदि कोई साधु अपना रूप परिवर्तित करता है तो आवश्यक नहीं कि वह मनुष्य का ही रूप धारण करे । आत्मा सूक्ष्म रूप है और मानव शरीर स्थूल तथा विशाल रूप ।"

★★★

हर एक में ईश्वर को देखो । वैयक्तिक मतभेदों तथा कर्मों के आधार पर शिक्षा देना धोखा है ।

★★★

"संत पक्षियों की तरह संग्रह नहीं करते । उनके पास जो होता है वे दे देते हैं ।"

★★★

यदि आप ईश्वर को देखना चाहते हों तो अपनी इच्छाओं को नष्ट कर दें । इच्छाएँ मन में होती हैं । जब आपके मन में कोई इच्छा पैदा हो तो उसके लिए सचेष्ट मत हों फिर वह अपने आप नष्ट हो जाएगी । यदि आप चाय का एक प्याला पीना चाहते हैं तो मत पीजिए । चाय पीने की इच्छा आप से आप मर जाएगी ।

★★★

आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए जिन चीजों की आवश्यकता पड़ेगी ईश्वर आपको देगा । परन्तु आप किसी चीज को पकड़कर मत बैठें ।

★★★

गरीब से प्यार करो । उसकी सेवा करो । गरीब को हर चीज दो ।

अपने कपड़े भी दे दो । अपना सब-कुछ दे दो । येशु ने अपना सब-कुछ दे दिया था । यहाँ तक कि अपना शरीर भी दे दिया था ।

★★★

मुझे कुछ नहीं चाहिए । मैं केवल दूसरों की सेवा करने के लिए जीवित हूँ ।

★★★

कच्ची मिट्टी का पात्र टूट जाने पर उसकी मिट्टी का दुबारा उपयोग हो सकता है परन्तु पक्की मिट्टी के बर्तन टूट जाने पर उसे फेंकना भी पड़ता है ।

★★★

कामुकता, लोभ, क्रोध तथा आसिक्त नरक के ही द्वार हैं ।

★★★

यदि तुम किसी चीज को खाली नहीं करोगे तो उसे भरोगे कैसे ?

★★★

"विवाह वस्तुतः गहरी आसक्ति है । यदि आप विवाहित हैं तो ईश्वर से जुड़ने के लिए गहरी भक्ति तथा गहरे अनुशासन की आवश्यकता होगी । "

★★★

"मैं यहाँ भी हूँ और अमेरिका में भी हूँ । मुझे जहाँ कोई याद करता है वहीं में जाता हूँ ।"

★★★

एक बार कैंची आश्रम में विचार-विमर्श के बीच माहाराज जी ने कहा था : "आप लोग समझते हैं कि मैं सम्पति इकट्ठी कर रहा हूँ और जमींदार बनना चाहता हूँ । मुझे किसी भी वस्तु से जरा भी आसक्ति नहीं है । मैं वैसे ही सब-कुछ छोड़ दूँगा जैसे मैने लंका छोड़ी थी ।" पाठकों को स्मरण होगा कि हनुमान जी ने लंका जला दी थी ।

★★★

एक बार बिगड़े बच्चों की तरह महाराज जी ने कहा : "ओ माँ मुझे भजन सुनाओ ।" फिर वे भजन स्वयं ही गाने लगे, जिसका आशय था कि बिना

भजन के आदमी ठीक वैसा ही होता है जैसे बिना पानी का कुँआ, बिना दूध की गाय या बिना दीप का मन्दिर ।

★★★

महाराज जी ने एक बार एक भक्त से कहा था : "जैसे तुम पानी को फिल्टर करते हो वैसे ही तुम्हें गुरुओं की भी कुछ जानकारी होनी चाहिए ।"

★★★

"जगह-जगह ईश्वर को खोजते फिरने से कहीं अच्छा है हर एक में ईश्वर को देखना ।"

★★★

दाँत में पीड़ा होने पर आप चाहें जो भी उपचार करें आपका ध्यान सदा दाँत पर ही टिका रहेगा ।

★★★

मैं संसार में रहता तो हूँ परन्तु उससे मेरा लगाव नहीं । मैं बाजार में से गुजर तो रहा हूँ परन्तु खरीदार नहीं हूँ ।

★★★

यदि आप में किसी चीज के प्रति आसक्ति नहीं तो आप सादा जीवन सादे वातावरण में बिताना पसंद करेंगे ।

★★★

मंदिर पत्थरों के ढेर ही तो हैं । एक आसक्ति उनसे जोड़े रखती है ।

★★★

आत्मबोध के मार्ग में आसक्ति सबसे बड़ा रोड़ा है ।

★★★

यह सारा संसार ही आसक्तिमय है । और आप इसलिए चिंतित हैं कि स्वयं आसक्त हैं ।

★★★

संसार का बदलते रहने का स्वभाव ही है । कलियुग (काला युग) को यदि ऐसा रूप ही धारण करना है तो करने दो । यदि आप स्वामी नहीं तो किसी

तरह आप उसे रोक भी नहीं सकते । फिर चीं-चपड़ करने की क्या जरूरत है ।

★★★

यदि मरने के समय आप का ध्यान आम पर है तो आप कीड़े के रूप में जन्म लेंगे । यदि एक साँस की आकांक्षा भी आपमें रह गई तो आपको पुनः जन्म लेना पड़ेगा ।

★★★

संत के नेत्र सदा परमात्मा पर केन्द्रित रहते हैं । जिस क्षण भी वह उन्हें अपना मान लेता है संतपन समाप्त हो जाता है ।

★★★

मैं सब कुछ जानता हूँ । मैं क्यों जानूँ ?

★★★

कर्म ही ईश्वर है, कर्म ही पूजा है ।

★★★

जो ईश्वर का काम करता है उसका काम ईश्वर करता है ।

★★★

निर्धन की सेवा करो और ईश्वर को याद रखो । तुम येशु से मिलकर एकाकार हो जाओगे ।

★★★

अपने मस्तिष्क को सदा कार्य में लगाए रखना चाहिए ।

★★★

हृदय कभी बूढ़ा नहीं होता ।

★★★

यदि किसी माता का पल्लू, सिर पर न होता तो महाराज जी कहते : 'माँ यह ढंग नहीं है ।' और वह माँ सिर पर पल्लू ले लेती ।

★★★

माता का स्थान ठीक ईश्वर के बाद होता है, और उसने इस रूप का निर्माण इसलिए किया है कि अपने को इसके द्वारा अभिव्यक्त कर सके । ईश्वर और माता ही सभी अपराधों को क्षमा करते हैं ।

★★★

बालिकाओं के विद्यालय के निर्माण के प्रसंग में महाराज जी ने कहा था : "बालिकाओं को शिक्षित करो और वे समाज को शिक्षित करेंगी ।"

★★★

सैकड़ों योगियों से ऊँचा पद सती स्त्री का होता है । स्त्रियाँ ईश्वर को प्यार अधिक सहज भाव से करती हैं ।

★★★

स्त्री को अपने पति की सेवा के द्वारा ईश्वर की सेवा करनी चाहिए । स्त्री यदि अपने पति के प्रति निष्ठावान है तो वह योगियों से ऊँची है ।

★★★

ईश्वर के इस परिवार में सभी स्त्रियाँ माताएँ तथा बहनें हैं और सभी पुरुष पिता तथा भाई ।

★★★

संपूर्ण संसार तुम्हारा घर है और समस्त लोग तुम्हारा परिवार है ।

★★★

सभी स्त्रियों को मातृवत् देखो और उनकी माता की तरह सेवा करो । जब तुम सारे संसार को अपनी माँ की तरह देखने लगोगे तुम्हारा अहं हवा हो जाएगा ।

★★★

ब्रह्मचारी बनना आवश्यक है । एक स्त्री के साथ रहनेवाला भी ब्रह्मचारी होता है । स्त्री आपको एक क्षण में ईश्वर के पास ले जा सकती है ।

★★★

स्त्री सर्प है, उसे छूना भी नहीं चाहिए ।

★★★

कामिनी और कंचन ईश्वर के मार्ग के रोड़े हैं ।

★★★

यौन ऊर्जा में ईश्वर को रचने की शक्ति है । यदि आप अपनी यौन ऊर्जा बढ़ा लें तो आपमें ब्रह्म को अनुभूत तथा प्राप्त करने की शक्ति विकसित हो जाएगी ।

★★★

येशु और हनुमान ने सभी स्त्रियों का मातृत्व देखा था । आपको ईश्वर को प्राप्त करने के लिए माता को जानना होगा ।

★★★

मंदिर में जूते उतार कर जाना चाहिए जिससे उस स्थान की हलचलें पैरों के रास्ते आप में प्रवेश कर सकें ।

★★★

महाराज जी ने एक बार माताओं से कहा था कि जिन कंपनों (क्रियाओं) के साथ भोज़न बनाया जाता है वह निश्चय ही आप की मनःस्थिति से प्रभावित होता है । यदि अपने भोजन को आप प्रसाद बना दें तो उससे आप पवित्र होंगे । कोई पुरुष कितना ही पवित्र क्यों न हो यदि वह सही मनःस्थिति के बिना बना हुआ भोजन प्राप्त करता है तो वह भोजन उसके मन में विक्षोभ उत्पन्न करेगा । शुद्ध भोजन का सेवन कर योगी भी महान बन जाता है ।

★★★

भक्तों ने कई बार देखा है कि माताएँ अपने हाथ से महाराज जी को भोजन करा रही हैं । ऐसे ही एक अवसर पर महाराज जी ने कहा था : 'मैं पुरुषों को खिलाता हूँ परन्तु स्त्रियों को मुझे खिलाना चाहिए , क्योंकि सभी स्त्रियाँ मेरी माताएँ हैं ।'

★★★

मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ मुझे राम ही दिखाई पड़ते हैं , इसीलिए मैं हर एक वस्तु का सम्मान करता हूँ ।

★★★

मैं कुछ नहीं करता, ईश्वर ही सब कुछ करता है ।

★★★

मुझमें कोई सिद्धि नहीं । मैं तो कुछ भी नहीं जानता ।

★★★

संत कभी धन ग्रहण नहीं करता ।

★★★

धन चिंताओं का सर्जक है ।

★★★

धन त्याग दो तो सारा धन तुम्हारा है ।

★★★

धन से लगाव ईश्वर के प्रति विश्वास के अभाव का सूचक है ।

★★★

धन मार्ग का रोड़ा है । ईश्वर से मिलने के लिए धन की आवश्यकता नहीं ।

★★★

धन समस्या नहीं । समस्या तो उसका सही उपयोग न करने से उत्पन्न होती है । यदि धन का समझदारी भरा उपयोग हो तो लाखों-करोड़ों रुपए सहज ही प्राप्त हो जाते हैं ।

★★★

कुंडिलिनी को जाग्रत करने के लिए ध्यान रखो । ईश्वर का चिंतन करने से वह अपने आप जाग्रत हो जाती है ।

★★★

ईश्वर को देखने के लिए विशेष नेत्रों की आवश्यकता होती है, अन्यथा उस आघात को सहन नहीं किया जा सकता ।

★★★

एक व्यक्ति आश्रम में दिन-रात इतना कठोर परिश्रम करता था कि उसे महाराज जी के दर्शन तक नहीं होते थे । परन्तु एक दिन ऐसा हुआ कि शाम के समय सभी भक्त जा चुके थे और महाराज जी अकेले तख्त पर बैठे हुए थे । वह महाराज जी के पास जाकर बैठ गया । महाराज जी को बड़ा आश्चर्य

हुआ कि इस आदमी ने कभी शक्ल तक नहीं दिखाई । फिर उन्होंने उससे पूछा : 'तुम्हें क्या चाहिए ।'

उस आदमी के मुँह से एक ही शब्द निकला —आत्मज्ञान ।

महाराज जी ने उत्तर दिया : "सभी की सेवा करना ही आत्मज्ञान है ।"

★★★

एक व्यक्ति स्नान के लिए गंगा जी की ओर जा रहा था कि रास्ते में महाराज जी के दर्शन हुए । महाराज जी ने यह कहते हुए उसे वापस लौटा दिया : "लोगें की सेवा करना गंगा स्नान से कहीं उत्तम है ।"

★★★

दो वृद्ध मेले में जा रहे थे । मेले के समय गंगा का स्नान पुण्य का कार्य समझा जाता है । महाराज जी ने टिप्पणी की : "नहीं, स्नान यहीं कर लो । गंगा हर जगह है ।"

★★★

एक बार महाराज जी प्रोफेसर मुकर्जी (इलाहाबाद युनिवर्सिटी) के यहाँ ठहरे हुए थे । वे कुछ अस्वस्थ थे इसलिए उन्होंने कमरे के बाहर ताला लगवा दिया था । बाद में वे शहर की ओर दौड़ते हुए गली में दिखाई पड़े । जब उनसे पूछा गया कि बंद दरवाजे से आप बाहर कैसे निकले तो उन्होंने कहा : "बंदर ने मच्छर-सा लघु रूप धारण कर लिया और खिड़की से उड़ गया ।"

★★★

—महाराज जी, आप सब कुछ कर सकते हैं । आप हनुमान हैं ।

—मैं हनुमान नहीं हूँ मैं कुछ भी नहीं कर सकता .....।

★★★

मैं सब-कुछ हूँ और मैं किसी के लिए कुछ भी कर सकता हूँ ।

★★★

महाराज जी ने एक प्रसिद्ध पंडित को कैंची आश्रम में श्रीमद्भागवत का पाठ करने के लिए बुलाया । ये महाशय बड़ी भारी सभाओं तथा शिक्षित श्रोताओं में बोलने के अभ्यस्त थे । उन्होंने इस सम्बन्ध में महाराज जी से कहा कि व्यक्ति बहुत कम हैं और अधिकतर गँवार हैं । महाराज जी ने कुछ झिड़की के से स्वर में कहा : "चिन्ता मत करो, हनुमान जी सुन रहे हैं ।"

●

संस्मरण

डॉ० रिचर्ड अल्पर्ट अमेरिका से १९६७ में पहली बार भारत आये थे । रिचर्ड को उनके मित्र कार से कैंची आश्रम ले गए । कार आश्रम के पास आकर रुकी । रिचर्ड के मित्र कार से बाहर निकले । तब तक आस-पास खड़े अनेक लोगों ने कार को घेर लिया । रिचर्ड के मित्र ने उन लोगों से पूछा : "गुरुजी कहाँ हैं ?" भीड़ में से किसी ने इशारा किया कि उस सामने वाली पहाड़ी पर । रिचर्ड का वह साथी पहाड़ी की तरफ दौड़ चला । भीड़ भी उसके साथ हो ली । रिचर्ड कार में अकेले पड़ गए। अपनी इस उपेक्षा से वे कुछ घबराए भी । फिर भी कार से बाहर निकले और नंगे पैर उबड़-खाबड़ रास्ते पर गिरते-पड़ते उस पहाड़ी पर चढ़ने लगे । उनके मन में गुरुजी से मिलने की तनिक भी उत्सुकता नहीं थी । वस्तुतः उन्हें पोंगापंथी साधुओं से सख्त नफरत थी ।

पहाड़ी पर चढ़ते समय जब वे एक मोड़ पर पहुँचे तो उन्हें एक सुन्दर घाटी दिखाई पड़ी । जिसमें एक पेड़ के नीचे साठ-सत्तर वर्ष की अवस्था का एक वृद्ध बैठा हुआ था और उसने कम्बल ओढ़ रखा था । यही कैंची आश्रम के बाबा महाराज जी थे । आठ-दस स्थानीय लोग उन्हें घेरे हुए बैठे थे । घाटी की सुन्दरता, उसकी हरियाली तथा पवित्रता ने रिचर्ड का मन अपनी ओर विशेष रूप से आकृष्ट किया । आकाश में घुमड़ते हुए बादलों ने इस दृश्य को और भी सुहावना बना दिया था ।

रिचर्ड का साथी दौड़ा-दौड़ा महाराज जी के समीप गया और उन्हें धरती पर लेटकर दण्ड-प्रणाम करने लगा । वह कुछ बोले जा रहा था और महाराज जी उसकी पीठ और सिर थपथपा रहे थे ।

इस दृश्य को देखकर रिचर्ड कुछ और भी विचलित हुए । तब तक रिचर्ड भी वहाँ जा पहुँचे । इनके मन में बाबा के चरण छूने की न इच्छा हुई और न इन्होंने उनके चरण छुए ही । इन्होंने चरण छूना आवश्यक भी नहीं समझा । हाँ महाराज जी अवश्य इनकी ओर रह-रहकर देख लेते और एक-आध बार उन्होंने इनकी ओर कंखियों से इशारा भी किया । उनके इस प्रकार देखने से

रिचर्ड की घबराहट और भी अधिक तीव्र हो गई । फिर महाराज जी रिचर्ड को संबोधित कर के कुछ कहने लगे । रिचर्ड की समझ में उनकी हिन्दी न आई । पास खड़े व्यक्ति ने अनुवाद किया और रिचर्ड के मित्र से कहा : "क्या आपके पास महाराज जी का चित्र है ?" रिचर्ड के मित्र ने उत्तर दिया : "हाँ, है।" फिर कम्बल लपेटे हुए बाबा ने उससे कहा कि वह चित्र इन्हें (डॉ० रिचर्ड की ओर इशारा करके) दे दो ।

डॉ० रिचर्ड को इस बात से कुछ प्रसन्नता हुई कि यह व्यक्ति अपना चित्र मुझे दे रहा है, परन्तु फिर भी इनके मन में उनके चरण स्पर्श करने की इच्छा न हुई ।

फिर बाबा ने कहा : "आप एक बड़ी कार से आएँ हैं ?" रिचर्ड ने उत्तर दिया : "हाँ" । कार मँगनी की थी । यद्यपि वे इसे माँगने के इच्छुक नहीं थे, क्योंकि इतना भारी जोखिम क्यों उठाया जाए । इस कारण यह कार भी उनके लिए परेशानी ही थी ।

महाराज जी ने फिर रिचर्ड की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा : "क्या यह कार मुझे दोगे ?" रिचर्ड के मुँह से निकलने को ही था : "क्या कहा ?" इस से पहले ही बाबा के चरणों में अभी तक लेटे हुए उनके साथी ने कहा : "यदि आप चाहते हैं तो इसे ले लें । यह आप ही की है ।" इतना सुनते ही रिचर्ड सकपका गए और हिम्मत बटोर कर कहने लगे : "जरा रुकिये । यह डेविड की कार है । इसे हम कैसे दे सकते हैं ?" यह सुनकर महाराज जी की हँसी निकल गई । सच तो यह है कि रिचर्ड को छोड़कर हर कोई हँस रहा था । महाराज जी ने फिर रिचर्ड से कहा : "आपने अमेरिका में खूब धन कमाया है ?" रिचर्ड के मस्तिष्क में एक क्षण के लिए प्रोफेसर और तस्कर के रूप में पिछले कुछ वर्षों में अर्जित अपार राशि कौंध सी गई और उन्होंने गर्व से कहा "जी हाँ ।"

—कितना कमाया ?

—पच्चीस हजार डालर ।

रिचर्ड ने इस राशि को अहंवश कुछ बढ़ा-चढ़ाकर ही बतलाया था । लोगों ने डालरों के रुपए बनाकर जब महाराज जी से बताया तब इस ऊँची राशि को सुनकर हर कोई दाँतों तले ऊँगली दबाने लगा । वैसे रिचर्ड ने डींग हाँकी थी । सच तो यह है कि उन्होंने ने कभी इतने परिमाण में धन नहीं कमाया था ।

संभवतः महाराज जी से असलियत छिपी नहीं थी, इसलिए वे कुछ देर

तक हँसते ही रहे । उनकी हँसी निकली चली जा रही थी । फिर उन्होंने कहा "तुम इन रुपयों से मुझे ऐसी कार ले दोगे ?" रिचर्ड के मन पर उस समय क्या बीता यह तो वही जाने पर उनके दिल में यह बात जरूर आई कि जो व्यक्ति मेरा नाम तक नहीं जानता वह मुझसे सात हजार डालर की कार कैसे माँग रहा है । परन्तु उनके मुँह से निकला "हो सकता है ।" रिचर्ड को अत्यन्त विचलित देखकर महाराज जी ने अपने भक्तों से कहा : "इन्हें यहाँ से ले जाएँ और प्रसाद खिलाएँ ।" फिर डॉ० रिचर्ड और उनके साथी ने दिव्य प्रसाद पाया और कुछ देर के लिए आश्रम में ही विश्राम किया । थोड़ी देर बाद वे दुबारा महाराज जी के पास गए तो उन्होंने इन्हें अपने पास बैठाया । फिर वे बड़े गौर से इनकी ओर देखते रहे और बोले : "कल रात को तुम आकाश में तारों का आनन्द ले रहे थे ?"

—जी ।

—तुम अपनी माँ के बारे में भी सोच रहे थे ।

—जी ।

पिछली रात यहाँ से दो-ढाई सौ किलोमीटर दूर रिचर्ड किसी होटल में ठहरे थे और रात को लघुशंका के लिए बाहर मैदान में गए थे । फिर तारों से जगमगाते आकाश को देखकर वे कुछ समय खुले में ही रहे । प्रकृति से यह मिलन उन्हें बहुत भला लगा । उस समय उन्हें अपनी माता का ध्यान आया । उनकी माता का देहान्त कोई नौ महीने पहले तिल्ली के बढ़ जाने से हुआ था ।

महाराज जी ने फिर पूछा : "गत वर्ष आपकी माता का निधन हो गया था ।"

—जी ।

—मरने से पहले उनका पेट बहुत अधिक फूल गया था ?

—कुछ क्षण रुककर रिचर्ड ने कहा—जी ।

फिर बाबा ने आँखें बन्द कर लीं और कमर को पीछे की ओर झुकाते हुए अंग्रजी में बोले—वे तिल्ली से मर गई थीं ।

उस समय रिचर्ड इतना सुनकर चकित हो गए । उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि महाराज जी यह सब कैसे जान और देख रहे हैं । लगता नहीं कि इसमें कार्य-कारण का कोई संबंध हो । उन्हें महाराज जी के मुँह से आप-से-आप सब-कुछ निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था । रिचर्ड का मस्तिष्क

चकराने लगा । किस बटन को दबाकर पूरी फिल्म दिखा रहे हैं ? मुझे वे लोग यहाँ क्यों लाए । कोई उत्तर उनकी समझ में नहीं आ रहा था ।

वे सोच रहे थे कि यह आखिर हुआ कैसे । जो बातें महाराज जी कह रहे थे वे उसके साथी को भी मालूम नहीं थीं । सब-कुछ वर्णनातीत था । उनका मस्तिष्क चक्कर खा रहा था ।

रिचर्ड नशे के आदी भी थे । उन्हें लगा कि यह सब-कुछ नशे के कारण तो नहीं मालूम हो रहा है । उनका मस्तिष्क उस समय कम्प्यूटर की तरह चल रहा था, परन्तु वे किसी नतीजे पर पहुँच नहीं पा रहे थे कि महाराज जी आखिर हजारों किलोमीटर दूर बैठे इन बीती हुई बातों को कैसे बता पा रहे हैं ।

फिर रिचर्ड को लगा कि मेरा सिर फटा जा रहा है और छाती में तीव्र वेदना हो रहीं है । वे एक दम चिल्ला उठे । वे काफी देर तक चिल्लाते रहे । परन्तु उनके इस चिल्लाने से यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था कि उनको प्रसन्नता की अनुभूति हो रही थी या विषाद की ।

परन्तु उन्हें ऐसा अवश्य लग रहा था कि मैंने अपना कोई उद्देश्य पूरा कर लिया है और अपनी मंजिल पर पहुँच गया हूँ ।

डॉ० रिचर्ड को एल०एस०डी० की गोलियों की भी लत पड़ी हुई थी । एक दिन उनके मन में महाराज जी से इन गोलियों के संबंध में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त करने का विचार भी आया परन्तु वे किसी कारण से महाराज जी से प्रश्न न कर सके । दूसरे दिन जब वे महाराज जी के समक्ष उपस्थित हुए तो महाराज जी ने ही पूछा : "कुछ पूछना चाहते हो ।" रिचर्ड के मन में उस समय कोई प्रश्न नहीं उठ रहा था इसलिए बिल्कुल मूढ़ों की तरह उन्होंने कहा : "नहीं महाराज जी, **मेरे** मन में कोई प्रश्न नहीं है ।" यह उत्तर महाराज जी को कुछ अस्वाभाविक सा लगा और उन्होंने कुछ उखड़े हुए स्वर में कहा : "वह दवा कहाँ है ?" रिचर्ड की समझ में कुछ न आया । परन्तु उनके मित्र ने कहा कि एल०एस०डी० की गोलियों के संबंध में तो महाराज जी नहीं पूछ रहे हैं ?" महाराज जी ने सिर हिलाया । गोलियों की डिबिया कार में रखी हुई थीं । रिचर्ड उसे लेने के लिए गए । जब डिबिया ले आए तो उन्होंने अपनी हथेली पर उसे उड़ेल दिया । उसमें कई तरह की और भी गोलियाँ थीं । कोई दस्त की तो कोई बुखार की । महाराज जी ने उन सभी गोलियों के बारे में पूछा : "क्या ये शक्तिवर्धक हैं ।" रिचर्ड की समझ में आया कि महाराज जी शारीरिक बलवर्धन के संबंध में पूछ रहे हैं, इसलिए उन्होंने उत्तर दिया—नहीं ।

परन्तु बाद में उनकी समझ में आया कि महाराज जी यह पूछ रहे थे कि क्या ये समाधि की सिद्धि में सहायक होती हैं । खैर !

महाराज जी ने हथेली फैला दी । रिचर्ड ने एल०एस०डी० की एक गोली महाराज जी की हथेली पर रख दी । हर गोली में ३०० माइक्रोग्राम विशुध्द एल०एस०डी० था जो एक युवा व्यक्ति के लिए एक बार की पूरी खुराक थी। महाराज जी ने और गोली का संकेत किया । रिचर्ड ने एक गोली और रख दी । उन्होंने फिर संकेत किया और रिचर्ड ने एक और गोली रख दी । ६०० माइक्रोग्राम भारी खुराक थी जो किसी नए व्यक्ति के लिए घातक सिद्ध हो सकती थी । सहसा महाराज जी ने तीनों गोलियाँ एक साथ फाँक लीं । रिचर्ड को परेशानी हुई कि न जाने इनका प्रभाव कैसा हो !

रिचर्ड वहाँ एक घंटे तक बैठे रहे । महाराज जी पर उन की गोलियों का कुछ भी प्रभाव न दिखाई पड़ा । वे रिचर्ड की ओर देखकर हँसते भर रहे । रिचर्ड जब अमेरिका वापस पहुँचे तो उन्होंने अपने मित्रों से इस अद्‌भुत घटना का वर्णन किया । किसी को भी विश्वास नहीं हुआ । स्वयं रिचर्ड के मन में भी यह बात आई कि हो न हो महाराज जी ने गोलियाँ खाने का स्वाँग रचा हो और झटके से पीठ के पीछे फेंक दी हों ।

तीन वर्ष बाद रिचर्ड जब पुनः भारत आए तो महाराज जी ने उनसे पूछा : "पिछली बार जब तुम यहाँ आए थे तो तुमने मुझे गोलियाँ दी थीं ?"

—जी हाँ ।

—क्या मैं ने खाई थीं ?

रिचर्ड के चेहरे पर के भाव डूबने-उतराने लगे । पर उन्होंने कहा : "हाँ खाई तो थीं ।"

—फिर क्या हुआ ?

—कुछ नहीं ।

—अच्छा, अब जाओ ।

महाराज जी ने उस समय रिचर्ड को वहाँ से जाने की आज्ञा दे दी ।

दूसरे दिन महाराज जी अपने तख्त पर बैठे हुए थे कि रिचर्ड उनके दर्शनों के लिए आए । महाराज जी ने उनसे कहा :

—वह ओषधि तुम्हारे पास और है ?

रिचर्ड की अटैची में कुछ गोलियाँ अवश्य थीं । इसलिए कहा : "हाँ है ।"

—ले आओ ।

रिचर्ड डिबिया ले आए । उसमें ३००-३०० माइक्रोग्राम की पाँच गोलियाँ थीं । उनमें से एक गोली के दो टुकड़े हो चुके थे । रिचर्ड ने उन सबको अपनी हथेली पर रखा और हथेली को बाबा की तरफ बढ़ाया । महाराज जी ने साबुत चारो गोलियाँ को एक-एक करके उठाया और सामान्य ढंग से मुँह में रखा और उन्हें निगल गए । इस प्रकार रिचर्ड के मन के प्रश्न का उत्तर महाराज जी ने दे दिया ।

फिर महाराज जी ने पूछा : "क्या मैं पानी पी सकता हूँ ?"

—अवश्य ।

—गर्म या ठंडा ।

—चाहे जैसा भी ।

महाराज जी ने पानी के लिए आवाज दी और जब पानी लाया गया तो उन्होंने एक गिलास पानी पी लिया । फिर उन्होंने पूछा : "इनका असर कब तक होगा ?"

—बीस मिनट से एक घंटे तक ।

तब महाराज जी ने अपने एक सेवक को अपने पास बुलाया । उसने घड़ी लगा रखी थी । महाराज जी ने उसकी कलाई को कसकर थाम लिया और तब उसमें समय देखा ।

फिर पूछने लगे : "क्या यह मेरे सिर पर तो नहीं चढ़ जाएँगीं ?"

—हो सकता है ।

सब लोग वहीं बैठे रहे । फिर महाराज जी ने कम्बल से अपना मुँह ढक लिया । कुछ देर बाद जब उन्होंने मुँह पर से कम्बल हटाया तो उनकी आँखें घूम रही थीं, मुँह खुला था और लगता था कि वे पागल हो गए हैं । रिचर्ड को काटो तो खून नहीं । आखिर यह हो क्या रहा है । उन्हें लगा कि मुझे महाराज जी की शक्ति परखने में भूल हुई है । वे यह भी समझ रहे थे कि महाराज जी का तिस पर वृद्ध शरीर भी है । (यद्यपि उनकी वास्तविक अवस्था से वे परिचित नहीं थे ।) उन्हें अपने पर इस बात की बड़ी ग्लानि हो रही थी कि मैंने क्यों १२०० माइक्रोग्राम एल०एस०डी० उन्हें खाने को दिया । हो सकता है कि पिछली बार यह दवा उन्होंने फेंक ही दी हो । मेरे मस्तिष्क को पढ़ लिया हो और मेरा भ्रम दूर करने के लिए गोलियाँ खाई हों । हो सकता है कि उन्हें भान ही न हो कि ये गोलियाँ कितनी तेज हैं । रिचर्ड पश्चाताप और ग्लानि से अत्यन्त दुःखी थे, परन्तु जब पुनः उन्होंने महाराज जी की ओर देखा

Indian ... Co
115215
5/8/04

तो महाराज जी उन्हें पूर्णतः सामान्य दिखाई दिए और वे घड़ी को देख रहे थे ।

एक घंटा बीत चुका था । दवा की प्रतिक्रिया का नामोनिशान नहीं था । तब महाराज जी ने पूछा : " क्या इससे भी कोई तेज दवा तुम्हारे पास है"

—नहीं ।

—"बहुत पहले कुल्लू घाटी में इनका प्रयोग होता था । परन्तु अब योगियों को इनकी जानकारी नहीं । इनके सेवन से मन ईश्वर में पूरी तरह लग जाता था परन्तु बहुत से योगी इनका सेवन नहीं करते थे ।" उस दिन यह चर्चा यहीं समाप्त हो गई ।

फिर एक दिन रिचर्ड ने पूछा कि क्या मैं एल०एस०डी० की गोलियों को लूँ । तो महाराज जी ने कहा कि गर्मी के मौसम में इन्हें नहीं लेना चाहिए । यदि शीत ऋतु हो, शान्त वातावरण हो, तुम अकेले हो, तुम्हारा ध्यान ईश्वर की ओर उन्मुख हो तो तुम योगियो की दवा ले सकते हो । एल०एस०डी० संसार के लिए अच्छी हो सकती है परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं । दवा लेने के बाद तुम प्रभु के कमरे में जाओगे और उन्हें प्रणाम भी करोगे, परन्तु दो घंटे बाद वहाँ से उठकर चल दोगे । उत्तम ओषधि है प्रभु से प्यार । एल०एस०डी० सच्ची समाधि नहीं ।"

एक बार एक साधु ने डॉ० रिचर्ड से बात चलाई और उन्हें पश्चिमी लोगों के लिए उपयुक्त मंदिर बनाने की बात कही । जब इस संबंध में उन्होंने महाराज जी से पूछा तो उन्होंने कहा कि वह साधु आपसे घनिष्ठ संबंध तो स्थापित करना चाहता है पर उसका उपहार सच्चा नहीं । यदि सच्चा होता तो वह आपको जमीन दे देता, देने की बात न चलाता । महाराज जी रिचर्ड को अब रामदास के नाम से पुकारने लगे थे । वे कहते : "रामदास, आसक्ति का त्याग करो ।" रामदास कहते : "महाराज जी यह तो आपकी कृपा से ही छूट सकती है । महाराज जी झिड़की भरे स्वर में कहते : "यह सब लगाव छोड़ो । तुम्हें आश्रम नहीं बनाने चाहिए । किसी तरह का बंधन नहीं रखना चाहिए ।"

फिर महाराज जी ने रिचर्ड से पूछा : "क्या तुम्हारे मन में भी इच्छाएँ हैं ?

—हाँ, महाराज जी । कुछ लगता तो ऐसा ही है ।

—तब मैं तुम्हें इच्छाओं से मुक्त कैसे कर सकता हूँ ।

एक दिन रिचर्ड एकान्त में एक महिला भक्त से घुल-मिलकर बातें कर रहे थे कि सहसा वहीं महाराज जी पहुँच गए । रिचर्ड को अत्यन्त ग्लानि हुई । महाराज जी ने उस स्त्री की ओर संकेत करते हुए रिचर्ड से कहा : "इन्हें आप

बहुत अच्छी शिक्षा दे रहे थे ।" फिर उन दोनों से उन्होंने कहा : "आप दोनो को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।" इसके बाद महाराज जी किसी अन्य विषय की चर्चा करने लगे । रिचर्ड सोच नहीं पा रहे थे कि यह सब हो क्या रहा है ?

सभी मन्दिरों में स्त्रियों के और पुरुषों के शयन की अलग-अलग व्यवस्था होती थी । यदि वे पति-पत्नी हों तो अवश्य एक कक्ष में सो सकते थे । जब भी अधिक भक्त आश्रम में आ जाते थे तो महाराज जी उन्हें पास के वन विभाग के बंगले में सोने के लिए भेज दिया करते थे । वहाँ दो कमरे थे । एक दिन महाराज जी ने दो पुरुषों और दो स्त्रियों को वहाँ सोने के लिए भेज दिया । इनमें से दो पति-पत्नी थे और दो सामान्य स्त्री-पुरुष । रिचर्ड ने सोचा कि एक कमरे में दो स्त्रियाँ सो जाएँगी और दूसरे कमरे में दो पुरुष । भारतीय सभ्यता की यही रीति है । दूसरे दिन रिचर्ड को पता चला कि वे स्त्री-पुरुष एक ही कमरे में सोये थे, तो इन्होंने अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि यह बात सभ्य लोगों के आचरण के विपरीत है । फिर सभी लोग महाराज जी के पास पहुँचे । महाराज जी ने पूछा कि किस किस कमरे में कौन-कौन सोया था ? उन्हें बतलाया गया तो उन्होंने बस इतना कहा : —बहुत ठीक ।

महाराज जी ने अनेक बार रिचर्ड को बतलाया तथा कि स्त्री को कभी मत छुओ । "रामदास तुम्हारे लिए स्त्रियाँ साँप की तरह हैं ।" सच्चाई यह है कि महाराज जी यह जानते थे कि सभी स्त्रियाँ रिचर्ड की दृष्टि में माता तुल्य नहीं हैं । इसी भय के कारण रिचर्ड स्त्रियों के बजाए पुरुषों से ही अपना संबंध रखा करते थे । फिर भी महाराज जी की चेतावनी का विशेष प्रभाव उन पर न पड़ा ।

परन्तु प्रायः जब महाराज जी के दर्शन के लिए रिचर्ड आते तो महाराज जी उनकी ओर उँगली करके कहते : "कंचन और कामिनी ।" रिचर्ड अब तक जान चुके थे कि अनेक भारतीय संतों ने धन और स्त्री को आत्मज्ञान के मार्ग के गड्ढ़े कहा है । परन्तु फिर भी वे अपनी कमजोरी छोड़ नहीं सके थे । ऐसा लग रहा था कि अब वे आत्मबोध के टकराव के रास्ते पर हैं और देर-सवेर इनका अंत निश्चित है फिर भी अभी उनके मन में धन तथा स्त्री के सुख-भोग की थोड़ी कामना बाकी थी ही ।

परन्तु महाराज जी इस विषय में नरम रुख अपनानेवाले नहीं थे । दिन में उन्हें उस समय कई-कई बार बुला लेते थे जब कभी वे मंदिर के पिछवाड़े होते । हर बार वे महाराज जी के आगे नतमस्तक होते और हर बार महाराज जी

उनकी ओर अँगली उठाकर कहते कंचन-कामिनी । और तब रिचर्ड को वापस भेज देते । ऐसा स्पष्ट रूप से लक्षित होता था कि वे रिचर्ड को चेतावनी दे रहे हों । पर रिचर्ड इसे मामूली डाँट भर समझकर रह जाते । परन्तु ऐसा नहीं कि वे इस वासना से बचने के लिए प्रयत्नशील न हों । वे अवश्य प्रयत्नशील थे । उन्होंने अनेक आयोजनों में इस वासना की आहुति भी दी और ईश्वर से अपने को उस से बचाने की प्रार्थना भी की । परन्तु वास्तविकता यह थी कि उनका पिंड उस वासना से अभी छूटा नहीं था । १९७४ की बात है कि सूक्ष्म शरीर धारी एक स्त्री आध्यात्मिक शिक्षिका के रूप में रिचर्ड के पास आई और उनसे कहा कि मुझे महाराज जी ने आपके पास भेजा है, जिससे मैं आपको अध्यात्म संबंधी शिक्षा दे सकूँ । दोनों यौन-संबंधी तांत्रिक क्रियाओं में व्यस्त हो गये । इसके बाद उनकी कामिनी संबंधी लालसा का सदा के लिए अंत हो गया और जिससे वे पिंड छुड़ाना चाहते थे उससे उनका पिंड छूट गया ।

उन तांत्रिक क्रियाओं के दौरान उस स्त्री के लिए अपने शरीर में बने रहना बहुत कठिन प्रतीत हो रहा था । लगता था कि उसकी चेतना कहीं और उड़ती जा रही है । ऐसा सुझाया गया था कि इसे आभूषणों के द्वारा नियंत्रण में लाया जा सकता है । उन्होंने निश्चय किया कि इसे सोने का कंगन और अँगूठी ले दूँ । वे सर्राफ की दुकान पर पहुँचे । वहाँ महाराज जी के शब्द उनके कानों में गूँज उठे : "कंचन-कामिनी"। थोड़ी देर बाद उन्हें लगा कि स्त्री के प्रति जो भय था वह गायब हो गया है । स्त्री के प्रति उनकी लालसा जाती रही और जैसे अब वे अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकलने के लिये तैयार हों । उन्होंने उस स्त्री की शिक्षाओं को त्याग दिया । उन्हें यह प्रतीत हुआ कि महाराज जी की कृपा से ही उस स्त्री से मेरा संबंध हुआ था और उन्हीं की कृपा से उससे पिंड भी छूटा ।

× × ×

एक दिन पचास या साठ कांग्रेसी राजनीतिज्ञों का दल महाराज जी के दर्शनों कि लिए आ रहा था । महाराज जी हनुमान मंदिर में ठहरे हुए थे । वहाँ से दूर तक सड़क का रास्ता दिखाई देता था । इस प्रकार उन्हें पता था कि वे लोग आ रहे हैं । महाराज जी बिना किसी से कुछ कहे वहाँ से एकाएक उठे और पहाड़ी से नीचे उतर गये और एक भारतीय साधु तथा रामदास को साथ लेकर पैदल ही देवी मंदिर तक चले गये । जब वह दल वहाँ पहुँचा तो उसके लोगों ने महाराज जी के संबंध में जानकारी चाही । जिस रास्ते से महाराज जी पहाड़ी से उतरे थे उस ओर इंगित कर दिया गया और वह दल

उस ओर हो लिया । महाराज जी और रामदास देवी के चबूतरे पर ठीक आगे की ओर विराजमान हो गए । वह कांग्रेसी दल वहाँ पहुँचा और महाराज जी से कुल छह फुट की दूरी पर था परन्तु उनके दर्शन उसे न हुए । न उस दल को महाराज जी ही दिखाई पड़े और न रामदास ही । वे आपस में बातें कर रहे थे कि "नीब करौरी बाबा" कहाँ चले गये । जबकि बाबा ठीक उनके सामने बैठे हुए थे । महाराज जी ने स्वयं को भी उनकी दृष्टि से ओझल कर लिया था और रामदास को भी । रामदास चरस आदि का सेवन करता था जिसके कारण उसे खाँसी भी आया करती थी । इतने में उसे दौरा आया और वह खाँसना चाहता था परन्तु उसने डर से खाँसी रोकी कि खाँसी से उन कांग्रेसियों को पता चल जाएगा कि महाराज जी यहाँ हैं । महाराज जी ने रामदास से कहा चिन्ता मत करो, खाँसी रोको मत, जितना चाहो खाँसो । तब वह जोर-जोर से खाँसने लगा और उसे खाँसने से कुछ राहत भी मिली । परन्तु वे लोग न तो उन दोनों की बात ही सुन सके और न खाँसी की आवाज ही । फिर कांग्रेसी दल बिना दर्शन किए वहाँ से चल पड़ा और तब उसके बाद महाराज जी फिर प्रकट हो गए ।

× × ×

१९६८ की बात है, रिचर्ड कुछ दिनों से कैंची आश्रम में ही थे । किसी कारणवश उन्हें दिल्ली जाना पड़ा । उन दिनों ब्रह्मचारियों की तरह रह रहे थे । वे नंगे पाँव चलते थे तथा भगवा वस्त्र धारण करते थे । अपना काम-काज खत्म करके तथा कैंची रवाना होने से पहले वे एक शाकाहारी भोजनालय में गए । दोपहर का समय था । भूख उन्हें लगी ही थी । भोजन किया । भोजन के उपरान्त उनके सामने दो बिस्कुट और एक चाय का प्याला आया । उन्होंने सोचा कि ये बिस्कुट योगियों के खाने योग्य नहीं हैं परन्तु वे क्रीम वाले बिस्कुट थे और इस प्रकार वे लोभ-संवरण न कर सके । उस रेस्ट्रां में उनका सम्मान योगियों सा ही हुआ था फिर भी उन्होंने मुँह छिपाकर बिस्कुट खा लिए । इसके बाद जैसे ही वे आश्रम पहुँचे तो महाराज जी ने छूटते ही पूछा : "बिस्कुट खाने में कैसे थे ।"

× × ×

जब वृंदावन का मंदिर बनकर तैयार हुआ तब महाराज जी ने भवनिया नामक लड़के को उसका पुजारी नियुक्त किया । यह लड़का ब्राह्मण नहीं था और न ही इसे पूजा के विधि-विधान का ही कुछ ज्ञान था । महाराज जी ने

एक पंडित को बुलवाया और कहा कि इस लड़के को पूजा-अर्चना सिखला दो । महाराज जी ने उसे बाजार भेजा कि एक जनेऊ तथा एक तुलसी की माला ले आओ । महाराज जी ने अपने हाथों से माला और जनेऊ उसे पहनाया और कहा कि जाकर हनुमान जी की पूजा करो और फिर वह वहाँ का पक्का पुजारी बन गया ।

महाराज जी एक दिन कहीं बाहर गये थे कि आश्रम में एक सज्जन आए । उन्होंने मंदिर का निर्माण कराया था । उस पुजारी से उन्होंने जात पूछी और साथ ही संस्कृत के ज्ञान के संबंध में प्रश्न किया । पुजारी ने कहा कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, ठाकुर हूँ । इतना सुनते ही वे उखड़ गए । इतने में महाराज जी वहाँ आ गए थे और उनको अपने पीछे आने के लिए कहा । बड़े हाल में पहुँचे वहाँ और भी भक्त बैठे हुए थे । पुजारी के संबंध में खुली चर्चा हुई । तब महाराज जी ने पुजारी से कहा कि यदि तुम संस्कृत जानते हो तो भगवद्गीता का पाठ सुनाओ । पुजारी ने कहा : "नहीं महाराज जी ।" महाराज जी ने कहा : "झूठ मत बोलो ।" तब महाराज जी ने उस महाशय से कहा कि पुजारी को गीता के अट्ठारहों अध्याय कंठस्थ हैं । तब उस महाशय ने कहा : "ग्यारहवाँ और बारहवाँ अध्याय सुनाओ ।" महाराज जी ने अपना कम्बल उस पुजारी के सिर पर डाल दिया और साथ ही अपने हाथ से उसका सिर दो-तीन बार थपथपाया । पुजारी गीता सुनाने लगा । उसका संस्कृत का उच्चारण इतना अच्छा था कि वहाँ बैठे सभी ब्राह्मण मुग्ध हो गए । वे महाशय द्रवित हो उठे । और महाराज जी के चरणों में गिर गए । डेढ़ साल तक वह व्यक्ति वहाँ का पुजारी रहा । उसने फिर कभी गीता का पाठ तो नहीं किया परन्तु पूजा-प्रार्थना करने का ढंग कुछ ऐसा था कि सभी को ईश्वर-मिलन जैसे सुख की अनुभूति होती थी ।

× × ×

एक दिन महाराज जी दाढ़ी बनवाने के लिए नाई की दुकान पर गए । नाई ने दाढ़ी बनाते-बनाते कहा : "बहुत दिनों से मेरा लड़का घर से भागा हुआ है और उसका अभी तक कुछ पता नहीं लगा ।"

वह नाई अपने बच्चे के वियोग से अत्यन्त दुःखी तथा चिन्तित था । महाराज जी की अभी आधी ही दाढ़ी बनी थी और आधे हिस्से पर अभी साबुन लगा ही था कि उन्होंने कहा : "मुझे अभी बाहर जाना है ।"और वे आधी दाढ़ी बिना बनवाए ही वहाँ से बाहर निकल गए और थोड़ी देर बाद लघुशंका करके फिर दुकान में आकर शेष दाढ़ी बनवाई और दाढ़ी बनवाकर फिर चल

दिए । दूसरे दिन नाई के पास उसका लड़का आ गया और उसने एक विचित्र कहानी सुनाई । उसने बताया कि मैं यहाँ से कोई सौ मील की दूरी पर एक होटल में काम करता था । कल वहाँ उस होटल में दौड़ा-दौड़ा एक वृद्ध मेरे पास आया उसकी आधी दाढ़ी बनी थी । उसने मुझे रुपए दिए और कहा कि तुम पिता के पास आज ही गाड़ी से लौट जाओ ।

× × ×

किस्सा भूमियाधार का है । महाराज जी वहीं ठहरे हुए थे । सब लोगों ने सायं का भोजन किया और साढ़े दस बजे के करीब सब लोग सो भी गए । रात को एक बजे महाराज जी ने शोर मचाया कि मुझे जोर से भूख लगी है और मेरी दाल और चपाती खाने की इच्छा है । महाराज जी को सेवादार ने स्मरण कराया कि आप तो पहले ही भोजन कर चुके हैं । परन्तु वे माने नहीं और उन्होंने कहा कि मैं दाल और चपाती खाऊँगा । ऐसे महापुरुषों का रंग-ढंग कम ही समझ में आ सकता है । फिर सेवादार ने ब्रह्मचारी बाबा को उठाया, उसने आग जलाई तथा खाना बनाया । दो बज चुके थे । महाराज जी ने भोजन किया और आश्रम के लोग उन्हें देखते रहे ।

दूसरे दिन सुबह ११ बजे के लगभग एक तार आया । जिसमें लिखा था कि महाराज जी के अमुक भक्त का रात दो बजे निधन हो गया । जब यह तार महाराज जी को सुनाया गया तो उन्होंने कहा : "देखा, मैंने रात को चपाती और दाल क्यों खाई थी ।"

कुछ दिन बाद महाराज जी ने इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा : "मरते समय मेरे भक्त की इच्छा दाल और चपाती खाने की थी । मैं नहीं चाहता था कि मेरा यह भक्त इच्छा लिए हुए प्राण त्यागे ।"

× × ×

एक भक्त की पत्नी को युवावस्था से ही चेहरे तथा आँखों पर लकवे का गहरा असर हो गया था । वह इतनी दुःखी थी कि आत्महत्या करना चाहती थी ।

एक रात पति-पत्नी अलग-अलग पलंग पर सोए थे । रात के साढ़े तीन बजे दोनों को एक साथ महाराज जी के दर्शन हुए । पत्नी ने पति से कहा— "उठिए महाराज जी आए हैं, उनके लिए चाय की व्यवस्था करें ।" पति उठे परन्तु वहाँ कोई नहीं था । फिर उन दोनों को नींद नहीं आई । चाय बनी और उन दोनों ने पी भी । एकाएक पति ने जब पत्नी की ओर देखा तो उसकी

पलकें फिर से झपकने लगीं और चेहरा बहुत-कुछ सही दिखने लगा था । वे स्वस्थ हो चुकी थी । बाद में डाक्टर ने कहा : "यह अनहोनी हुई है । ईश्वर की कृपा लगती है ।"

× × ×

कानपुर के एक भक्त परिवार का एक व्यक्ति सेना में था और वह भारत-चीन युद्ध में गया हुआ था । एक सूचना आई कि उसकी मृत्यु हो गयी है । और यह सूचना उसके भाई ने जब महाराज जी को दी तो उन्होंने कहा : "नहीं वह मरा, नहीं है ।"

किसी ने भी उस समय महाराज जी पर विश्वास नहीं किया । छह महीने बाद उसकी विधवा ने पुनर्विवाह भी कर लिया और युद्ध विभाग की फाइल बंद हो गई । परन्तु कुछ समय बाद वह आदमी घर लौट आया ।

× × ×

१९४३ में महाराज जी फतेहगढ़ आए थे । वहाँ एक वृद्ध सज्जन अपनी पत्नी के साथ रहते थे । उनका लड़का बरमा की लड़ाई में गया हुआ था । जब महाराज जी उनके यहाँ पहुँचे तो उन दोनों ने महाराज जी का यथाशक्ति सत्कार किया । उनके यहाँ दो ही चारपाइयाँ थीं । महाराज जी ने कहा कि मैं अभी सोना चाहता हूँ । उन्हें एक चारपाई दे दी गई और उन पर वे दोनों दृष्टि लगाए रहे । महाराज जी सुबह चार बजे तक चारपाई पर पड़े-पड़े कराहते रहे । साढ़े चार बजे उन्हें चैन पड़ा । तब उन्होंने चारपाई से चादर उठाई और उसमें कुछ लपेट दिया और उस वृद्ध सज्जन से कहा : "इसे खोलकर देखना मत, सीधे गंगा में किसी गहरे स्थान पर ले जाकर फेंक आओ ।" और साथ ही यह भी कहा : "यह काफी भारी है इसे ध्यान से ले जाना और इसे इस प्रकार ले जाना कि तुम्हें कोई देखे नहीं । अन्यथा पुलिस तुम्हें पकड़ लेगी ।" जब वह सज्जन उस पोटली को गंगा की ओर ले जा रहे थे तो उन्हें छूने पर ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे इसमें गोलियाँ हों ।

जब वे सज्जन गंगा में पोटली फेंककर आए तो महाराज जी ने उन से कहा : "घबराओ मत तुम्हारा लड़का एक महीने तक लौट आएगा ।" जब लड़का लौटा तो उसने बताया कि "मैं करीब-करीब मर ही चुका था । हमारे दल पर दुश्मन ने घात लगाया था और संयोगवश मैं खाई में गिर पड़ा था । गोलियाँ मेरे दाहिने-बाएँ से निकलती रहीं फिर वे वहाँ से वापस लौट गए । साढ़े चार बजे वहाँ भारतीय जवान पहुँचे और उन्होंने मुझे खाई से निकाला । मैं ही उस दल में से अकेला जीवित बचा था ।"

यह ठीक उसी रात की बात है जिस रात महाराज जी फतेहगढ़ में ठहरे थे और रात भर कराहते रहे ।

× × ×

बहुत पुरानी बात है । एक अमेरिकन स्त्री लंदन आई हुई थी । वह एक बस से कहीं जा रही थी । उस बस में बहुत सी सीटें खाली थीं । पट्टू का कंबल बगल में दबाए एक वृद्ध सज्जन उस बस पर चढ़ा और उसने उसके बगल वाली सीट पर बैठने की इच्छा व्यक्त की जो खिड़की से सटी हुई थी । उस महिला को यह बात तो अच्छी नहीं लगी । परन्तु बात रखने के लिए उस वृद्ध सज्जन को खिड़की वाली सीट पर बैठने दिया । जैसे ही उस वृद्ध सज्जन ने अपनी मधुर और मंद मुस्कान उस महिला पर फेंकी तो वह निहाल हो उठी और अपने मन में सोचने लगी कि यह भला आदमी आखिर है कौन । इस से पहले कि अगले स्टाप पर बस रुकती, उस महिला ने चारों ओर आँखें दौड़ाईं पर वह वृद्ध कहीं दिखाई न पड़ा ।

वह वृद्ध जब से बस पर चढ़ा था तब से बस रास्ते में कहीं रुकी नहीं थी, इसलिए उसके उतरने का कहीं प्रश्न ही नहीं उठता था । उस महिला के बिना सीट से हटे वह वृद्ध उठकर कैसे, कब और कहाँ चला गया यह सोच-सोचकर वह बहुत अधिक हैरान थी ।

कुछ समय बाद एक मित्र के बुलावे पर वह महिला भारत आई । मित्र के पास उन्होंने महाराज जी का चित्र देखा । यह उसी व्यक्ति का फोटो था जो पट्टू का कंबल बगल में दबाए उन्हें लंदन की एक बस में मिला था ।

× × ×

एक सज्जन महाराज जी के दर्शनों के लिए आए और साथ में भेंट करने के लिए कुछ संतरे भी लाए । महाराज जी ने पास पड़ी एक खाली टोकरी में वे संतरे रख दिए और फिर कमरे में बैठे हुए हर व्यक्ति को तथा मंदिर में हर आने वाले को उसी टोकरी में से निकाल-निकालकर संतरे देने लगे । वे सज्जन आठ संतरे लाए थे और महाराज जी ने अट्ठावन संतरे बाँटे थे ।

× × ×

स्वामी शिवानंद की गिनती भारत के महान संतों में होती थी । वे ऋषिकेश में बहुत बड़ा आश्रम छोड़कर गए थे जिसमें उनके अनेक चेले रहते थे । महाराज जी प्रायः बिना किसी पूर्व सूचना के वहाँ चले जाया करते थे । जब भी महाराज जी वहाँ जाते थे कोई न कोई ऐसी घटना वहाँ घटा ही करती थी

जिसे आश्रमवासी बहुत दिनों तक याद रखा करते थे । कभी-कभी उस आश्रम के प्रमुख अपने हाथ से महाराज जी के लिए भोजन भी तैयार करते थे । एक बार महाराज जी ने एक अत्यन्त आदरणीय तथा उच्च कोटि के वृद्ध स्वामी को बुलाया । ये स्वामी जी सिवाए शिवानंद जी के किसी और संत को कुछ गिनते नहीं थे और अब भी उन्हीं की स्मृति की ही अराधना करते थे । वे महाराज जी के आगे भी नहीं झुकते थे । जब वे महाराज जी के पास पहुँचे तो महाराज जी ने कहा : "वेदव्यास जी आ गए हैं ।" महाराज जी के मुख से इन शब्दों का निकलना था कि वे स्वामी जी उनके चरणों पर लोटने लगे । फिर वे दोनों एक दूसरे को सही रूप में पहचानने लगे ।

शिवानंद आश्रम से एक दिन एक महात्मा महाराज जी के पास आए । महाराज जी ने उन्हें पूरियाँ खिलाईं और मंदिर के पीछे स्थित गुफा में बैठने के लिए कहा । वे स्वामी महाराज जी से इतने अभिभूत थे कि थोड़ी देर में फिर उनके पास चले आए । महाराज जी ने उन्हें पेड़ के नीचे बैठने के लिए कहा । यहाँ से वे महाराज जी को वे बराबर देख सकते थे । थोड़ी देर में वे क्या देखते हैं कि कैंची आश्रम ऋषिकेश के शिवानंद आश्रम में बदल गया है और महाराज जी ने शिवानंद का रूप धारण कर लिया है । शिवानंद के रूप में महाराज जी चलकर उस स्वामी के पास आए और कहने लगे : "क्या आपको हम दोनों में अन्तर दिखाई देता है ? क्या हम दोनों एक नहीं है ?"

स्वामी जी ने कहा : "आप ही तो उस रूप में भी थे । सचमुच आप दोनों एक हैं । आप इस रूप में मुझे भ्रमित कर रहे हैं ।" महाराज जी ने कुछ उत्तर नहीं दिया । बस मुस्कुराकर रह गये ।

× × .×

एक दिन महाराज जी लखनऊ से कुछ अधिकारियों को साथ लेकर एक बहुत ही गंदे मुहल्ले में गए । संभवतः यह दिखाने के लिए कि जैसे गरीबों की सुध लेना उच्चाधिकारी जानते ही न हों । फिर वे एक छोटी सी कुटिया के आगे रुके और आवाज लगाई "ओ मुस्लमान ।"अन्दर से एक सज्जन निकले । दोनों ने कसकर एक दूसरे को गले लगाया । फिर महाराज जी ने उस मुस्लमान सज्जन से कहा : "मुझे बहुत भूख लगी है ।"

—पर महाराज जी, मेरे पास तो कुछ खाने को है ही नहीं ।

—आप बहुत पाखंडी हैं । आपने झोपड़ी की छत में दो रोटियाँ खोंस रखी हैं ।

वह इतना सुनते ही सकपका गया । उसकी समझ में न आया कि महाराज जी को कैसे पता चला कि मैंने दो रोटियाँ छत में छिपा रखी हैं । वह मुस्लमान दोनों रोटियाँ ले आया । यद्यपि महाराज जी और उच्चाधिकारियों ने अभी कुछ देर पहले ही भोजन किया था, तो भी महाराज जी ने एक रोटी बड़े स्वाद से स्वयं खाई और दूसरी रोटी के टुकड़े किए और एक-एक टुकड़ा सभी अधिकारियों को देते हुए कहा कि प्रसाद लीजिए । इन प्रसाद लेनेवालों में से कई ब्राह्मण भी थे जो मुस्लमान के हाथ का छुआ तक नहीं खाते थे ।

× × ×

१९४० की बात है कि एक मुस्लमान आई०सी०एस० अधिकारी का लड़का इंग्लैंड गया था और वहाँ जाकर बीमार पड़ गया । लड़के की माँ उसे देखने के लिए इग्लैंड गयी थी । महाराज जी अपने एक ऐसे भक्त के यहाँ ठहरे हुए थे जिन्होंने कभी कुछ नहीं माँगा था । परन्तु उस बीमार बालक की चर्चा उन्होंने उनसे अवश्य की क्योंकि उन दोनों परिवारों में परस्पर घनिष्ठ संबंध था । इससे पहले की वे सज्जन महाराज जी से कुछ प्रश्न करते, महाराज जी ने स्वयं ही पूछ लिया : "तुम उस लड़के के बारे में तो नहीं पूछना चाहते हो जो इंग्लैंड पढ़ने के लिए गया है । उसके बारे में क्या पूछना चाहते हो । उसकी माँ वहाँ पहुँच गयी है । तुम उसे हवाई अड्डे पर छोड़ने गए थे । जैसे ही उसकी माँ उसके पास पहुँची उसकी हालत सुधरने लगी ।"

इस बात की बाद में पुष्टि हुई की उसकी माँ के लंदन पहुँचने के साथ ही उसकी हालत में सुधार होने लगा था ।

× × ×

महाराज जी के एक भक्त की एक वर्ष की लड़की तीस फुट ऊँची खिड़की से नीचे गिर पड़ी थी । उसे जरा भी चोट न लगी । उसका बाल तक बाँका नहीं हुआ । दूसरे दिन उसके माता-पिता को जब यह सूचना मिली कि महाराज जी कैंची आश्रम आए हैं, तो वे उस बच्ची को लेकर महाराज जी की सेवा में उपस्थित हुए । महाराज जी ने उनसे कहा : "यह लड़की ठीक हो जाएगी ।" जब यह लड़की दो वर्ष की हुई तो वह उसी घर की किसी दूसरी खिड़की से फिर तीस फुट की ऊँचाई से गिर पड़ी । इस बार भी उसे कोई चोट न आई । संभवतः उसी दिन महाराज जी कैंची पधारे थे । अतः उस बालिका के माता-पिता उसे डाक्टर के पास न ले जाकर सीधे महाराज जी के पास ले गए । महाराज जी ने यों ही कह दिया : "कोई बात नहीं, सब ठीक

हो जाएगा ।" इसे संयोग ही कहिए कि जब वही बालिका तीन वर्ष की हुई तो एक बार फिर उसी तरह गिर पड़ी । इस बार गिरने की स्मृति उसे आज भी है । उसने कहा कि जब मैं गिर रही थी तो ऐसा लग रहा था कि मैं तैरते हुए नीचे उतर रही हूँ । इस बार जब उसके माता-पिता उसे महाराज जी के पास ले गए तो महाराज जी ने कहा : "मैं इसे मरने नहीं दूँगा ।"

× × ×

एक दिन छत पर से एक भक्त परिवार का आठ महिने का बालक नीचे गिर पड़ा । उस समय उसका बड़ा भाई तथा घर का नौकर पतंग उड़ाने में निमग्न थे । लड़का तीस फुट से नीचे संगमरमर के फर्श पर गिरा था । गिरने के बाद लड़का हिला-डुला नहीं । फिर डाक्टर के पास उसे ले गए । डाक्टर ने उसे देखा-परखा तो बालक मुस्कुराने लगा । बालक को खरोंच तक नहीं लगी थी । डाक्टर ने कहा कि यह लड़का कैसे बच गया यह बात समझ में नहीं आती । कुछ दिनों बाद महाराज जी उस परिवार में आए और कहने लगे : "आपको पता ही नहीं कि आपकी पीठ पीछे कौन है जो आपकी रक्षा करता है । बच्चा जमीन पर नहीं गिरा था, वह तो मेरी गोद में गिरा था ।"

× × ×

एक दिन एक साधारण व्यक्ति अपनी मुराद पूरी कराने के उद्देश्य से महाराज जी के पास आया था । वह मंत्री बनना चाहता था । महाराज जी ने कहा : "आप मंत्री बन जाएँगे । यह प्रसाद ले जाओ ।" इस घटना के कई वर्ष बाद एक दिन महाराज जी कैंची आश्रम में घंटों समाधि लगाए हुए बैठे थे । महाराज जी का एक भक्त भी उनके पास बैठा हुआ था । फिर एकाएक उन्होंने आँखें खोलीं । किसी का नाम लेकर जोर से पुकारा । पन्द्रह मिनट बाद एक कार कैंची आश्रम के द्वार पर पहुँची । उस कार पर तिरंगा फहरा रहा था । महाराज जी ने अपने भक्त से कहा कि पहले उसे प्रसाद दे दो फिर उसे अंदर बुलाओ । प्रसाद पाने के बाद वह व्यक्ति अन्दर आया । उसने कहा : "महाराज जी मैं एक बार पहले भी आपके पास आया था । आपने मुझसे कहा था कि मैं मंत्री बनूँगा । अब मैं मंत्री बन गया हूँ । आपकी कृपा से यह संभव हुआ है । पदग्रहण करने से पहले मैंने आपके दर्शन करना और आपकी चरण-धूलि माथे पर लगाना आवश्यक समझा । यहाँ से लौटने के बाद ही मंत्री का पद ग्रहण करूँगा ।"

दो बहनें थीं जिन्हें महाराज जी पर अत्यंत श्रद्धा थी । उनमें से एक स्नानगृह में गई और जब नहाकर निकली तो भाव-विह्वल या समाधि-मग्न सी निकली और यह कहते हुए निकली : "मुझे अभी-अभी महाराज जी के स्नानगृह में दर्शन हुए हैं ।" उस समय महाराज जी सैंकड़ो मील दूर थे । जब दूसरी बहन दौड़े-दौड़े स्नानगृह में गई तो वहाँ उसे विशाल नाग महाराज जी के दर्शन हुए ।

× × ×

बात नीब करौरी गाँव की है । उन दिनों वहाँ महाराज जी गुफा में रहकर समाधि लगाया करते थे । एक स्त्री गुफा में प्रविष्ट हुई तो क्या देखती है कि महाराज जी के शरीर में कई साँप लिपटे हुए हैं । उसने कहा कि अगर अन्दर साँप होंगे तो मैं गुफा में नहीं आया करूँगी । महाराज जी ने उसे अन्दर बुलाया और उससे कहा : "घबराओ मत ।" देखते-ही-देखते सभी साँप उनके शरीर में समा गए ।

× × ×

एक भगत श्री युधिष्ठर जी को कार में भूमियाधार लाया । फिर वे पास के झरने पर स्नान करने के लिए चले गये । वहाँ से दौड़े-दौड़े आये और महाराज जी से कहने लगे कि मुझे साँप ने काट लिया है । इतना कहते-कहते ही वे बेसुध हो कर गिर पड़े । साँप के काटने से उनका हाथ नीला पड़ गया था । महाराज जी ने ब्रह्मचारी से कहा कि कम्बल बिछा दो और युधिष्ठिर को उस पर लिटा दो । तब उन्होंने ब्रह्मचारी से कहा कि पानी का गिलास ले आओ । फिर उस गिलास को महाराज जी ने अपने कम्बल में कुछ देर ढके रखा । फिर महाराज जी चिल्लाए : "इसे साँप ने काट लिया है अब क्या होगा ?" युधिष्ठिर बेसुध पड़े थे । फिर जब महाराज जी ने उस पर जल छिड़का तो वे उठकर बैठ गये ।

× × ×

दादा मुकर्जी का भाँजा बीमार था । उसे छोटी माता निकल आई थी । एक दिन उस की हालत एकाएक बिगड़ गई । फिर उसे जमीन पर उतार दिया गया । लगता था कि क्षण दो क्षण ही उसका जीवन शेष है । किसी ने सुझाव दिया कि महाराज जी का चरणामृत इसके मुँह में डाला जाए । जब ऐसा किया गया ते बालक उठकर बैठ गया और अगले ही दिन उसका रोग भी दूर हो गया ।

ठीक उसी समय मीलों दूर पहाड़ पर बैठे महाराज जी के सारे शरीर पर एकाएक दाने निकल आए । उस समय सिद्धि माँ भी महाराज जी के साथ थीं । पहाड़ों पर यह रोग जल्दी नहीं होता । इसलिए वहाँ के लोगों की समझ में न आया कि महाराज जी का कौन-सा उपचार किया जाए । उन्होंने इसे एलर्जी समझा और लगाने की दवा ले आए । दूसरे ही दिन सब दाने दूर हो गये । और महाराज जी ने कहा : "यह दवा चमत्कारी थी । पता नहीं वह दाने क्या हुए । हो सकता है किसी चीज से मुझे एलर्जी हुई हो ।"

× × ×

एक परिवार मंदिर में आया हुआ था । उसमें दादा दादी भी थे । जब वे लोग महाराज जी के समक्ष उपस्थित हुए तो महाराज जी ने दादा जी से कहा : "हमारी आपसे भेंट पहले भी हो चुकी है ।" दादा जी ने कहा मुझे याद नहीं पड़ता । मुझे तो लगता है कि आज पहली बार आपके दर्शन कर रहा हूँ ।" पर महाराज जी अपनी बात पर अड़े रहे । फिर महाराज जी ने कुछ देर के लिए आँखें बन्द कर लीं और फिर कहा : "आपको याद नहीं कि रेलवे स्टेशन पर आपने मेरा बिस्तर उठाया था ।"

पहले तो दादा जी को लगा कि महाराज जी को मुझसे किसी और का धोखा हुआ है, परन्तु फिर याद आया कि जब मेरी अवस्था ग्यारह या बारह वर्ष की थी तो कई लड़के मास्टरों के साथ साइकिलों से किसी यात्रा पर निकले थे । उन दादा जी की साइकिल रास्ते में टूट गई थी । और उनके साथी उन्हें अकेला छोड़कर आगे बढ़ गए थे । साइकिल बनवाने के लिए कुछ पैसों की आवश्यकता थी पर उस समय उनके पास कुछ भी नहीं था । तब वे रेलवे स्टेशन पर यह सोचकर गए थे कि किसी मुसाफिर का सामान गाड़ी से प्लेटफार्म से बाहर ले जाने पर कुछ मजदूरी मिल ही जाएगी ।

परेशानी यह भी थी कि बालक की अवस्था बहुत कम थी इसलिए छोटा-मोटा समान ही उठाने में वह सक्षम था । वह प्रथम श्रेणी के डिब्बे के पास जा कर खड़ा हो गया । एकाएक चमकता हुआ सूट पहने, हाथ में छड़ी लिए चमचमाते हुए जूते पहने और डर्बी हैट लगाए एक यात्री उतरा । उसके हाथ में लपेटे हुए कम्बल की गठरी थी । गठरी बहुत हल्की थी । वहाँ पहुँचने पर उस बालक को उन्होंने पाँच रुपए दिये जो उस समय की मजदूरी के हिसाब से बहुत अधिक थे । उस व्यक्ति ने उस बालक से यह भी कहा कि अगर चाहो तो कल फिर यहीं आ जाना । परन्तु बालक ने रुपया लिया, साइकिल बनवाई और अपनी यात्रा पर आगे निकल पड़ा । फिर वह कभी वहाँ नहीं गया ।

× × ×

एक बार उपराष्ट्रपति गिरि की पत्नी महाराज जी के दर्शनों के लिए आश्रम आईं । महाराज जी ने मिलने से इन्कार कर दिया । वैसे श्रीमती गिरि के आने की सूचना महाराज जी ने उनके पहुँचने से पहले ही आश्रम में दे दी थी । महाराज जी ने कहा : "उन्हें प्रसाद दे दो ।"

कुछ दिन बाद राज्यपाल अपने पुत्र के साथ महाराज जी से मिलने आये । उस समय महाराज जी विश्राम कर रहे थे । महाराज जी के विश्राम में खलल पड़ा । खैर जो भी हो राज्यपाल ने महाराज जी से पूछा की यदि गिरि राष्ट्रपति का चुनाव लड़ें तो कैसा रहे ।

बाद में चार-पाँच लोगों के साथ गिरि जी भी महाराज जी के पास आए । पन्द्रह मिनट एकान्त में महाराज जी से उनकी बात-चीत हुई । इसके बाद गिरि वहाँ से चल पड़े । दिल्ली गये और जाते ही उन्होंने उपराष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र दे दिया । जब उनसे पुछा गया कि ऐसा क्यों किया तो उन्होंने उत्तर दिया : "आत्मा की पुकार है ।" तब राष्ट्रपति के चुनाव में शामिल हुए । अभी मतपत्रों की गिनती आरम्भ हुई भी नहीं थी कि महाराज जी ने कहा : "गिरि जीत गए ।"

× × ×

भारत के प्रधानमंत्री नेहरू जी असम जाते समय कुछ समय के लिए कलकत्ता हवाई अड्डे पर रुके हुए थे । हवाई अड्डे पर एक कॉन्फ्रेन्स हुई जिसमें अधिकारियों तथा पत्रकारों ने भाग लिया । नेहरू जी अपने विचार प्रकट कर ही रहे थे कि इतने में एक और हवाई जहाज आया । उसमें से यात्री निकलने लगे । कुछ क्षणों बाद नेहरू जी ने देखा कि उनकी कॉन्फ्रेन्स से बहुत से लोग उठकर उस दूसरे हवाई जहाज की ओर चले जा रहे हैं । नेहरू जी ने उस संबंध में अपने सलाहकारों से पूछा । उनमें से एक महाराज जी का भक्त भी था । उसने बतलाया कि उस जहाज में बाबा नीब करौरी आए हैं और लोग दर्शनों के लिए दौड़े चले जा रहे हैं । नेहरू जी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा : "हमारा भारत निश्चय ही भाग्यशाली है, क्योंकि यहाँ ऐसे बड़े-बड़े सन्त हैं, जिनके दर्शनों के लिए लोग अपने प्रधानमंत्री को भी छोड़ जाते हैं ।"

× × ×

बहुत दिनों से नेहरू जी की इच्छा महाराज जी के दर्शन करने की तो थी, परंतु उनसे किसी न किसी कारण भेंट न हो पाती थी । एक दिन नेहरू

जी के एक घनिष्ट मित्र महाराज जी के पास आए । वे महाराज जी के पुराने भक्त थे । उन्होंने महाराज जी से इस संबंध में प्रार्थना की । महाराज जी ने कहा : "मै नेहरू जी के आवास पर चला तो जाऊँगा, परन्तु वहाँ किसी प्रकार का आयोजन या भीड़-भाड़ नहीं होनी चाहिए ।"

नेहरू जी के अंतिम दिनों में महाराज जी कहा करते थे : "नेहरू जी अच्छे व्यक्ति हैं । वे हृदय से ईश्वर की वंदना करते हैं । इसका प्रदर्शन नहीं करते ।"

× × ×

१९६२ में जब चीन-भारत युद्ध हुआ तो सैनिक कमाण्डरों ने नेहरू जी को परामर्श दिया कि यथाशीघ्र नई दिल्ली खाली कर देनी चाहिए, क्योंकि वहाँ चीन का हमला अवश्यंभावी है । ऐसा समझा जाता है कि नेहरू जी इस विचार के विरुद्ध थे और इस संबंध में कोई आदेश नहीं निकालना चाहते थे । भारत के इतिहास में कई बार ऐसा हुआ है कि विदेशी आक्रमण के समय राजधानी को दिल्ली से स्थानान्तरित करना पड़ा और हर बार ऐसे मौके पर देश को पराजय झेलना पड़ी । सैनिक कमाण्डरों ने नेहरू जी को परामर्श दिया कि २४ घंटे के अन्दर दिल्ली खाली करने का आदेश निकाल देना चाहिए, जिससे भारी क्षति से बचा जा सके । नेहरू जी बहुत ही परेशान थे । उन्होंने महाराज जी के भक्त एक मुख्यमंत्री को आदेश दिया कि वे इस संबंध में महाराज जी से परामर्श करें । मंत्री महोदय ने नेहरू जी से कहा कि मुझे महाराज जी पर पूर्ण विश्वास है कि वे भविष्यदर्शी हैं और यदि वे दर्शन देना चाहतें हैं तो स्वयं आ जाएँगें ।

उन्होंने कहा कि यदि कोई महाराज जी को सच्चे मन से स्मरण करे तो वे कभी निराश नहीं करते । जो हो इस भक्त मंत्री को मालूम नहीं था कि इस समय महाराज जी हैं भी कहाँ । उसी शाम को महाराज जी का फोन नेहरू जी के इस मंत्री के पास आया : "उनसे कह दें कि चिन्ता की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जाएगा । चीनी सैनिक पहले ही पीछे हटने लगे हैं ।" दूसरे दिन सुबह प्रमुख कमाण्डरों ने नेहरू जी को सूचित किया कि शत्रु पीछे लौट गये हैं और लड़ाई बन्द हो गई है ।

× × ×

मुजीब के भाई आए । इन्हें इस बात का ज्ञान नहीं था कि मेरा भाई जीवित भी है कि नहीं । बहुत से लोग यहीं समझते थे कि वह मर गया है, परन्तु महाराज जी ने कहा : "चिन्ता मत कीजिए, आपके भाई आएँगे और राजा की तरह आएँगे ।" ऐसा हुआ भी और उन्हीं के नेतृत्व में बंगलादेश का निर्माण हुआ ।

पच्चीस वर्ष के पहले की बात है । अनेक लोग महाराज जी के पास बैठे हुए थे, उनमें से कई महाराज जी के भक्त भी थे । महाराज जी ने कहा : "आप देखेंगे कि पाकिस्तान का एक भाग भारत के साथ हो जाएगा ।"

१९६२ में चीन-भारत युद्ध के समय एक भक्त ने महाराज जी से कहा : "चीन की सेना असम में प्रविष्ट हो गई है । हमारी सेना ने दर्शक की भूमिका निभाई है । यदि वह इसी प्रकार मूक दर्शक बनी रहीं तो चीनी सेनाएँ मैदान में उतर आएँगी ।"

महाराज जी ने कहा : "कुछ नहीं होगा " चीन की सेनाएँ वापस लौट जाएँगी । भारत ऋषियों की तपोभूमि है, यहाँ कम्यूनिजम नहीं आ सकता है ।"

भक्त ने फिर पूछा : "महाराज जी, ये चीनी सेनाएँ फिर आई ही क्यों ?"

उनका उत्तर था : हमें जगाने भर को ।

कुछ लोगों ने विचार प्रकट किया कि भारत का शासन चीन के हाथों मे चला जाएगा । इस पर महाराज जी ने कहा "नहीं, नहीं, यहाँ कम्युनिजम नहीं आ सकती । यहाँ के लोग धर्मनिष्ठ तथा भक्त हैं । जिन देशों में धर्म की प्रधानता है, उन देशों में कम्युनिजम नहीं आ सकता है ।"

× × ×

एक बार नेपाल की एक रानी महाराज जी के दर्शनों के लिए आईं । उनके पति भी महाराज जी के परम भक्त थे । उन्होंने बहुत सी वस्तुएँ महाराज जी को भेंट में दीं । परन्तु उन्होंने कहा : "नहीं, नहीं, इन्हें गरीबों में बाँट दो ।" फिर उन्होंने पास बैठे हुए अपने एक भक्त के कान में कहा, "इस औरत के पास बहुत धन है, क्या इससे कुछ ले लें ।"

भक्त ने कहा : "ले लीजिए ।"

फिर दोनों हँस पड़े । इस तरह का उनका हँसी-मजाक था । उनके संबंध में प्रायः लोग कहा करते थे कि महाराज जी कभी पैसों को छूते तक नहीं ।

महाराज जी ने एक बार कहा था : "रुपया सीधे ढंग से ही आना चाहिए, क्या आप चाहते हैं कि मेरे नाम पर धब्बा लगे ।"

जब महात्मा गाँधी जी को गोली मारी गई तब चारों ओर चीख-पुकार मचने लगी थी । ब्रह्मचारी ने पूछा, "लोग क्यों चिल्ला रहे हैं ।" जब उन्हें बतलाया गया तो उन्होंने कहा : "देश में एक ही ऐसा व्यक्ति व्यक्ति है जो उन्हें पुनः वापस ला सकता है और वह है नीब करौरी बाबा ।"

एक बार महाराज जी अपने किसी भक्त के यहाँ ठहरे हुए थे । उन्होंने अपने भक्त से कहा कि मेरे कमरे के बाहर ताला लगा दीजिए । कमरे के बाहर ताला लगा दिया गया । उस कमरे में कई खिड़कियाँ थीं, जिनमें मोटे-मोटे लोहे के सीखचे भी लगे हुए थे । थोड़ी देर के बाद वहाँ एक और भक्त आ पहुँचा और उसने आते ही पूछा : "महाराज जी कहाँ जा रहे थे ।" गृहस्वामी ने उत्तर दिया : "क्या कहा ? वे तो कमरे में बंद हैं ।"

"ऐसा नहीं हो सकता मैंने उन्हें अभीं रिक्शे में बैठे हुए उस तरफ जाते हुए देखा है ।"

उनकी बहन ने उसी समय महाराज जी का स्वागत किया । महाराज जी ने कहा, "मैं खिचड़ी खाऊँगा । मेरी तबियत आज कुछ ढीली है इसलिए आज मैं केवल खिचड़ी ही खाऊँगा ।"

गृहस्वामी ने तब कमरे का ताला खोला और देखा तो कमरा खाली था । महाराज जी उसमें नहीं थे । कमरे की खिड़कियों के सीखचे भी सही-सलामत थे । उन्होंने कमरे को फिर बंद करके उसी प्रकार ताला लागा दिया । लगभग एक घंटे के बाद उन्हें कमरे के अन्दर से खटपट का शब्द सुनाई पड़ा । और इस बार जब ताला खोला गया तो महाराज जी अन्दर कमरे में विराजमान थे ।

× × ×

कानपुर के निकट पंकी में महाराज जी के भक्तों ने हनुमान जी का मंदिर निर्मित किया था । वहाँ मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा कुछ ही दिनों में होनेवाली थी । महाराज जी उन दिनों इलाहाबाद में ठहरे हुए थे और उन्होंने सब से कह रखा था कि मैं समारोह में उपस्थित नहीं होऊँगा । समारोह के दिन इलाहाबाद में सुबह-सुबह महाराज जी ने गृहस्वामी से कहा : "मुझे कुछ समय के लिए इस कमरे में अकेला छोड़ दें और मेरे कमरे के बाहर ताला लगा दें ।"

अगले दिन कुछ व्यक्ति पंकी से इलाहाबाद लौटे और जिस मकान में महाराज जी ठहरे हुए थे उसके स्वामी को भी वहाँ प्रसाद देने के लिए आये । उन्होंने प्रसाद तो दिया ही, पंकी के समारोह और भण्डारे का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया । उन्होंने यह भी कहा कि सभी कार्य ढंग से सम्पन्न हुए । वहाँ महाराज जी भी आए थे जबकि पहले से उन्होंने सब से कह रखा था कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा ।

गृहस्वामी ने कहा : "ऐसा नहीं हो सकता । महाराज जी तो उस दिन यहीं इलाहाबाद में रहे ।"

अभ्यागत ने कहा जो हो महाराज जी तो पंकी में भी थे । ग्यारह से बाहर बजे तक तो वे मंदिर में ही थे ।

× × ×

नैनीताल के एक भक्त को कुछ लम्बे समय के लिए व्यापार के सिलसिले में कहीं जाना था । जाने से पहले यह सोच कर महाराज जी के दर्शन करने के लिए गया कि पता नहीं कि जब मै वापस लौटूँ तब तक महाराज जी कहीं और न चले जाएँ । इस प्रकार उनके दर्शन शीघ्र न मिल पाएँ । जब वह महाराज जी के दर्शन कर के लौट रहा था तो इसी प्रकार के विचार उसके मन में थे । वहाँ से वह सीधे स्टेशन गया । गाड़ी पर बैठा और गाड़ी चल दी और कई स्टेशनों पर रुकते हुए आगे बढ़ने लगी । फिर एक स्टेशन पर वह पानी लेने के लिए जैसे ही उतरा तो किसी ने बतलाया कि सामने नीब करौरी बाबा बैठे हुए हैं । भक्त हैरान हुआ और उसने सोचा कि मैं उन्हें नैनीताल में छोड़कर आ रहा हूँ। यह कैसे सम्भव है ? फिर वह दूसरे प्लेटफार्म पर गया और देखा कि महाराज जी भक्तों से घिरे बैठे हैं । अनेक लोगों ने महाराज जी से बातें भी कीं । तब महाराज जी ने कहा : "जल्दी से अपनी गाड़ी पर जाओ, नहीं तो गाड़ी चल देगी । गाड़ी चलने वाली है ।"

जब वह भक्त अपनी यात्रा समाप्त कर के नैनीताल पहुँचा तो महाराज जी तब भी वहीं थे । सच तो यह है कि इस बीच महाराज जी नैनीताल से बाहर गए ही नहीं थे ।

× × ×

एक दिन महाराज जी विश्राम कर रहे थे । सिद्धि माँ तथा कुछ महानुभाव भी कमरे मै बैठे हुए थे । माँ तथा अन्य लोगों को भी ऐसी अनुभूति हुई कि महाराज जी कहीं चले गये हैं । कुछ समय बाद उनके शरीर में कम्पन हुआ तो माँ ने पूछा कि कहाँ चले गये थे ? तो इस पर महाराज जी हँस पड़े । जब कुछ लोगों ने कह दिया कि महाराज जी बिना वायुयान के अमेरिका चले जाते हैं तो इस पर उन्होंने डाँट पिलाई और फिर हँसने लगे ।

× × ×

एक भक्त ने कहा था कि मेरी माँ ने महाराज जी को एक ही समय में दो स्थानों पर देखा है । वे भूमियाधार में महाराज जी की ओर बढ़ रहीं थी जब उन्होंने एक और महाराज जी को देखा जो ठीक उन्हीं की तरह थे ।

एक सड़क के किनारे बैठे हुए थे और दूसरे जंगल में । कुछ क्षण बाद एक रूप तो तिरोहित हो गया पर दूसरे रूप से उन्होंने बात की ।

× × ×

बात १४ जनवरी १९६५ की है । मुकर्जी दादा के घर में एक बड़ा सा पूजाघर है । उस पूजाघर में एक अलमारी है जिसमें पैरों के निशान दिखाई दिये । उन लोगों का ऐसा विश्वास था कि ये चरणचिह्न महराज जी के ही हैं । तब से वे प्रति वर्ष १४ जनवरी को वहाँ भण्डारा करते हैं । जब महाराज जी का सामना हुआ तो उनसे पदचिह्नों के बारे में पूछा गया । महाराज जी ने कहा : "मै वहाँ गया था और मुझे देख लिया गया था ।"

डा० रिचर्ड अमेरिका में एक नोबल पुरस्कार विजेता भौतिक वैज्ञानिक से वार्तालाप कर रहे थे । जब उस मनोवैज्ञानिक ने महाराज जी के विषय में कुछ जानने की इच्छा व्यक्त की तो रिचर्ड ने उन्हें कई किस्से सुनाये । रिचर्ड ने ऐसे किस्से भी सुनाए जिनमें महाराज जी एक ही समय में दो-दो स्थानों पर दिखाई दिए । उस भौतिक विज्ञानिक ने कहा : "ऐसा संभव नहीं । भौतिक विज्ञान का यह आधारभूत सिद्धांत है कि कोई वस्तु एक समय में दो स्थानों पर नहीं हो सकती ।"

परन्तु रिचर्ड ने कहा : "सच तो यही है कि ऐसा महाराज जी ने कर दिखालाया है ।"

× × ×

एक कर्नल जब अपने सैनिक शिविर में पहुँचे तो क्या देखते है कि महाराज जी मुख्य द्वार के बीचोंबीच जमीन पर लेटे हुए हैं । जब कर्नल ने उन्हें हटने के लिए कहा तो महाराज जी ने उत्तर दिया : "यह तो ईश्वर की भूमि है और मैं सी०आई०डी० का आदमी हूँ ।" कर्नल मारे गुस्से के लाल-पीले हो उठे और उन्होंने सुरक्षा सैनिकों से कहा कि महाराज जी को यहाँ से हटाओ और ले ज़ाकर कटघरे में बंद कर दो । कुछ घंटे बाद जब कर्नल मुख्य द्वार पर पुनः आये तो महाराज जी उसी प्रकार वहाँ सड़क के बीचोंबीच लेटे हुए मिले । कर्नल ने सुरक्षा सैनिकों को डाँट-फटकार की कि उन्होंने आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया । परन्तु सैनिकों ने कर्नल को विश्वास दिलाया कि आप की आज्ञा का पालन अक्षरशः किया गया था । कटघरे के रजिस्टर की जब जाँच की गई तो उससे सिद्ध हुआ कि महाराज जी अभी कटघरे में बंद हैं । उसके बाद वह कर्नल महाराज जी का भक्त बन गया ।

× × ×

महाराज जी कानपुर में एक भक्त के परिवार में ठहरे हुए थे । उन्होंने बरामदे के कई चक्कर लगाए । फिर उन्होंने एक बड़े कमरे में झाँककर देखा । वह परिवार के मुखिया का दफ्तर था । तब उन्होंने कहा इस कमरे को खाली कर दिया जाए । आप कोई दूसरा कमरा ले लीजिए । यह कमरा मेरे लिए छोड़ दीजिए । वे उस कमरे में तीन-चार महीने रहे । सुबह-शाम एक घंटे के लिए उस कमरे से बाहर निकलते थे । और किसी को उस कमरे के अंदर नहीं आने देते थे ।

× × ×

१९६१ में अपने अनेक भक्तों के साथ महाराज जी ने चित्रकूट की यात्रा की । वहाँ नदी के किनारे खड़े होकर वे जोर-जोर से पुकारने लगे : "गोपाल, गोपाल ।" यह गोपाल ग्वाला था । कोई व्यक्ति इसे जानता नहीं था । लेकिन महाराज जी बराबर उसे बुलाते रहे । महाराज जी ने इसके संबंध में कहा कि मेरा मित्र था और मेरे लिए बहुत सी चीजें लाता था । जब उस व्यक्ति की खोज-बीन हुई तो पता चला कि चार पीढ़ी पहले कोई ऐसा व्यक्ति था जो ऐसे ही गुरु का भक्त था । बाद में गोपाल का पोता मिला भी । उसकी भी उस समय अवस्था काफी ढल चुकी थी ।

महाराज जी ने एक बार कहा कि यहाँ एक फकीर रहते थे, जिसे घोड़ा बाबा कहते थे । मैं उनसे मिलने के लिए प्रायः आया करता था । ऐसा कहा जाता है कि कोई तीन सौ वर्ष पहले घोड़ा साई बाबा हुए थे ।

× × ×

एक वृद्धा चिरकाल से महाराज जी के शरीर में कोई परिवर्तन न देखकर बहुत व्यग्र सी थी । महाराज जी ने उसे बतलाया और कहा : "माँ, मैं मर गया था । मेरा पुनः जन्म पहाड़ पर हुआ है ।" लखनऊ में अस्सी वर्ष का एक वृद्ध मुस्लमान महाराज जी के दर्शन के लिए आया था । उसने बतलाया कि जब मैं दस-पन्द्रह वर्ष का किशोर था उस समय महाराज जी प्रौढ़ावस्था प्राप्त कर चुके थे । महाराज जी ने कहा इसकी बातों पर विश्वास मत करो । एक अन्य अस्सी वर्ष के बुड्ढे ने कहा कि मैं महाराज जी को पिछले सत्तर वर्षों से जानता हूँ । उस समय महाराज जी बीस वर्ष के युवा थे और उन्होंने मुझे पहली नौकरी शुरू करने से पहले आशीर्वाद दिया था ।

× × ×

एक और सज्जन ने बतलाया कि मैंने पहली बार महाराज जी के दर्शन १९३० में किए थे । उस समय मैं स्कूल में पढ़ता था महाराज जी हमारे घर

पर फैजाबाद में आया करते थे । पिता जी के सेवानिवृत्त होने के बाद मैं जेल सुपरिन्टेन्डैन्ट बना । आगरा, बरेली, कानपुर, लखनऊ आदि शहरों में जहाँ-जहाँ मेरा तबादला हुआ वहाँ-वहाँ महाराज जी पधारा करते थे । हमारे घर में सदा महाराज जी के लिए एक कमरा सुरक्षित रहता था । १९६० के बाद से मुझे महाराज जी में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं दिखाई दिया ।

× × ×

१९६८ में एक वृद्धा महाराज जी के दर्शन करने के लिए आई । जब उसने महाराज जी को देखा तो उसे बड़ी हैरानी हुई । उसने कहा कि नीब करौरी बाबा अब कैसे जीवित हो सकते हैं ? उनका शरीर छूटे मुद्दत हो गई होगी । मेरे पिता नीब करौरी बाबा के भक्त थे और वे कहते थे कि मैं चालीस वर्षों से बाबा को जानता हूँ । इस समय मेरी आयु ७३ वर्ष की है । मैं जब सात वर्ष की थी तब मैंने बाबा के दर्शन किए थे और मुझे अब भी वैसे ही दिखाई दे रहे हैं जैसा कि मैंने उन्हें पहली बार देखा था । महाराज जी उस पर क्रुद्ध हुए और फिर भक्तों से उससे और बातें करने से मना कर दिया ।

× × ×

एक बार महाराज जी कार से यात्रा कर रहे थे रास्ते में ऐसी जगह पेट्रोल खत्म हो गया जहाँ उसे प्राप्त करना संभव न था । महाराज जी ने ड्राईवर से कहा टंकी में पानी डालो और आगे बढ़ो । फिर उन्होंने ड्राईवर को आदेश दिया कि जब तक मैं जीवित रहूँ तब तक यह बात किसी से मत कहना । महाराज ने कहा कि यदि तुम ने इस संबंध में कुछ कहा तो तुम्हें कोढ़ हो जाएगा । महाराज जी के शरीर छोड़ने के कोई तीन वर्ष बाद उस ड्राईवर ने उक्त किस्सा सुनाया ।

× × ×

महाराज जी कार से कश्मीर जा रहे थे कि रास्ते में उसका कल्च स्लिप करने लगा । एक छोटे से गाँव में ड्राईवर ने गाड़ी रोक दी क्योंकि पहाड़ी रास्ते पर उससे खतरा हो सकता था । नाम मात्र का मिस्त्री अवश्य ढूँढ़े मिल गया । पर वह जैसे-जैसे क्लच को सही करता वैसे-वैसे वह और खराब होता जाता और अंत में उसने बिल्कुल काम करना बंद कर दिया । एक भक्त भी महाराज जी के साथ यात्रा कर रहे थे । उन्होंने महाराज जी से पूछा कि अब क्या किया जाए । महाराज जी ने कहा कि अब किसी ट्रक को रोको और कार को उसके पीछे बाँध दो । जितने भी ट्रक मिले वे सब कश्मीर से लौट

रहे थे । जब महाराज जी से यह बात कही गई तो उन्होंने कहा कि अरे ये ब्राह्मण इतने कंजूस हैं कि इतना पैसा भी खर्च नहीं कर सकते कि ट्रक कार को घसीटकर ले जाए । उस भक्त के पास एक हजार रुपए थे । उसने एक बस वाले से बात की और वह कार को ले चलने के लिए तैयार भी हो गया । फिर उस भक्त ने एक रस्सा खरीदा, कार को उससे बाँधा और जैसे ही चलने को हुए तो सामने से एक और बस आ गई । उसके चालक ने कहा कि आगे चेक पोस्ट है इसलिए बस को कार खींचकर नहीं ले जानी चाहिए । अब अंधेरा हो चला था । वहाँ रहने के लिए होटल भी नहीं था । अतः वह भक्त महाराज जी के पास गया और उसने निवेदन किया कि अब हमारे सामने तीन विकल्प हैं । पहला यह है कि हम यहीं बिना कंबलों के रात इसी कार में बिताएँ । दूसरा यह कि ट्रक से कार बाँधकर पीछे लौट चलें या फिर तीसरे आगे बढ़ें । उस भक्त का आशय यह था कि अब आप की शक्ति के सहारे ही आगे बढ़ा जा सकता है क्योंकि कल्च खराब हो चुका है ।

महाराज जी ने कहा चलो, चला जाए । कार चल पड़ी । श्रीनगर पहुँचने तक न गाड़ी रास्ते में कहीं खड़ी हुई न क्लच का ही उपयोग करना पड़ा और न ही रास्ते में पेट्रोल लेना पड़ा । सामान्य परिस्थितियों में ऐसा होना असम्भव ही था ।

× × ×

एक बार महाराज जी ने एक भक्त से कहा कि यहाँ से जो गाड़ी जाती है उसमें दो सीटें प्रथम श्रेणी के वातानुकूलित डिब्बें मे आरक्षित करा दें । सभी अधिकारियों ने उस भक्त को बतलाया कि कलकत्ता से कालिका तक सभी सीटें आरक्षित हैं । फिर भी उस भक्त ने दो टिकट खरीद लिए भले ही आरक्षण प्राप्त न हुआ था । उस भक्त के मन में विचार आया कि मैं खाली समय बरबाद कर रहा हूँ और अंततः मुझे ये टिकट वापस करने पड़ेंगे । महाराज जी स्टेशन पर चले आए और प्लेटफार्म पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे । फिर एक जगह रुक गए । इसके बाद जब गाड़ी आई तो प्रथम श्रेणी का वातानुकूलित डिब्बा ठीक महाराज जी के सामने खड़ा हुआ । इस भक्त को अचम्भा हुआ कि महाराज जी ने कैसा स्थान खड़े होने के लिए पहले से चुन लिया था । कन्डक्टर दरवाजे पर ही खड़ा था भक्त ने उसे दो शायिकाओं के लिए कहा । कन्डक्टर ने कहा : "पागल हुए हो क्या ? कलकत्ता से कालका तक एक भी बर्थ खाली नहीं है ।" उस भक्त ने अपने को असहाय समझकर महाराज जी

की ओर देखा । उन्होंने एक उँगली उठाई और धीरे से कहा : "अटैन्डेन्ट"। वह भक्त फिर अटैन्डेन्ट के पास गया और उससे दो बर्थों के लिए कहा । अटैन्डेन्ट ने कहा : "हाँ हाँ जगह है । एक पार्टी ने कलकत्ता से कालका तक की सीटें आरक्षित कराई थीं परन्तु कुछ व्यापारिक कारणों से उसे मुगलसराय उतर जाना पड़ा । बस दो ही जगहें खालीं हैं ।" यह वही डिब्बा था जो महाराज जी के सामने खड़ा था ।

× × ×

महाराज जी अपने एक भक्त के यहाँ कभी सुबह, कभी शाम और कभी रात को भी पहुँच जाया करते थे ।

१९४० की बात है । महाराज जी एक दिन रात के समय अपने उसी भक्त के यहाँ पहुँचे और जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने लगे । नींद से उठने के बाद जब गृहस्वामी ने दरवाजा खोला तो महाराज जी ने कहा : "बहुत से भक्त मेरे पीछे पड़े हुए हैं । मुझे कहीं शान्ति नहीं मिलती इसलिए मैं अपने लिए सिर छिपाने के लिए जगह खोज रहा हूँ ।" उस व्यक्ति ने कहा कि मैं इस संबंध में आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ । जैसे ही वे आपको नहीं देखेंगे वे सीधे यहाँ भी आ पहुँचेंगे ।

"ठीक है मैं आपकी चारपाई के नीचे छिप जाऊँगा । खिड़कियाँ और दरवाजे सभी बंद कर दीजिएगा । एक चटाई और कम्बल मुझे दे दीजिए । अगर लोग ढूँढ़ते हुए आएँ तो उनसे कह दीजिएगा कि महाराज जी को हमने नहीं देखा ।" उस व्यक्ति ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया था । जब लोग आधी रात को उसके यहाँ आए तो उसने उन्हें नींद खराब करने के नाम पर खूब डाँटा-फटकारा और उलटे पाँव लौटा दिया । महाराज जी उस व्यक्ति की खाट के नीचे सोते रहे और खाट की चादर इस प्रकार नीचे तक खींच ली थी कि कोई देख न पाए । वह व्यक्ति भोर में चार बजे उठा । उसने देखा कि महाराज जी उस कमरे में कहीं नहीं हैं । फिर उसने दूसरे कमरे में भी उन्हें ढूँढ़ा । यद्यपि दरवाजे और खिड़कियाँ अब भी सब बन्द थीं तो भी महाराज जी वहाँ नहीं थे । बाद में उसे पता चला कि महाराज जी उसी मकान में चले गए हैं जहाँ से वे आए थे । जब महाराज जी से पूछा गया कि जब आप गए होंगे तब खिड़कियाँ-दरवाजे तो सब बन्द थे तो महाराज जी ने इतना ही कहा : "आपको परेशान करना नहीं चाहता था ।"

× × ×

एक सज्जन महाराज जी को अपने साथ नीब करौरी से वृन्दावन ले चलना चाहते थे परन्तु महाराज जी जाना नहीं चाहते थे । उन दिनों महाराज जी नीब करौरी में ही रह रहे थे । महाराज जी ने उनसे कहा कि मुझे कमरे में बन्द कर दीजिए । मुझे कुछ आवश्यक काम करना है । जब वे व्यक्ति वृन्दावन से लौट आए तो उन्होंने कहा कि वृन्दावन में महाराज जी का सान्निध्य प्राप्त करके बहुत ही आनन्द आया । परन्तु जब ताला खोला गया तो महाराज जी उसी कमरे में विराजमान थे ।

× × ×

महाराज जी जागेश्वर जा रहे थे । उनके साथ एक भक्त भी था । जब वे अल्मोड़ा पहुँचे तो महाराज जी ने उस भक्त से कहा कि यहाँ समाधि लगाओ । उस समय उस भक्त को ऐसा लगा कि जैसे आकाश में उठा जा रहा होऊँ और कैलास पर्वत ठीक मेरे सामने हो । इसके बाद उसकी चेतना लुप्त हो गई । कुछ देर बाद जब उसे होश आया तब वह फिर आगे को चल पड़े । बाद में उस भक्त की पत्नी तथा अन्य लोगों ने भी कहा कि ठीक उस समय महाराज जी और उस भक्त को हमने दिल्ली में देखा था । उनको इस बात की हैरानी भी हुई कि ये लोग इतनी जल्दी दिल्ली से क्यों चले गए ।

× × ×

एक दल वसुधारा (गोमुख) जा रहा था । एक माता कुछ अस्वस्थ थीं इसलिए उसे साथ ले चलना दल के लिए संभव नहीं था । जब दल के अन्य लोग चलने लगे तो वह माता अपने भाग्य को कोसने लगी । थोड़ी देर बाद महाराज जी उसके पास आए और उसे आश्वस्त करते बोले : "माँ आप वसुधारा देखना चाहती हैं ।" तब महाराज जी ने उसके हाथ को स्पर्श किया और कहा जरा आप बाहर बरसाती तक चली चलें । और वे जब बरसाती में आईं तो उन्हें सामने वसुधारा दिखाई पड़ी । वे हर्षातिरेक से विह्वल हो गईं । बाद में पता चला कि वह दल वासुधारा नहीं पहुँच पाया था क्योंकि पहाड़ गिरने से मार्ग अवरुद्ध हो गया था । जब दल के लोग लौटकर आए तो उस माता ने कहा मैं तो वसुधारा के दर्शन कर आई । उन लोगों को पहले तो विश्वास नहीं हुआ फिर उन्होंने पूरी घटना सुनाई और वसुधारा का पूरा विवरण दिया तो लोग आश्चर्यचकित हुए । वहाँ एक वृद्ध गाईड भी था जो कई बार वसुधारा हो आया था । उसने भी उस माता द्वारा बतलाए हुए विवरण की पुष्टि की ।

× × ×

हनुमानगढ़ में एक बार घी चुक गया था । महाराज जी ने एक भक्त से कहा कि बाल्टी में थोड़ा पानी भर कर पीछे जंगल में रख आओ । थोड़ी देर बाद महाराज जी ने कहा कि मुझे पेशाब करने के लिए जाना है फिर वे वहाँ से उठकर बाहर चले गए । जब लौटे तो जोर-जोर से चिल्ला रहे थे : "आप लोग ध्यान ही नहीं रखते । चोर घी चुरा ले गए । वह देखो घी का टिन जंगल में पड़ा हुआ है ।" और वे लोग घी की बाल्टी वहाँ से ले आए ।

× × ×

कुम्भ मेले के अवसर पर महाराज जी लोगों से कह रहे थे कि गंगा जल वस्तुतः जल नहीं दूध है । फिर एक दिन महाराज जी के साथ कुछ भक्त गंगा जी में नाव में संगम की ओर जा रहे थे तो उनमें से किसी में महाराज जी के वचन की सत्यता परखने की इच्छा हुई । लेकिन उन्होंने महाराज जी से कुछ कहा नहीं । महाराज जी ने उससे कहा कि गंगा से एक लोटा जल भर लो और उसे कपड़े से ढक दो । फिर जब महाराज जी ने अपने भक्तों के लिए उसे गिलास में डाला तो वह बहुत मीठा दूध निकला । क्योंकि बहुत से भक्त अभी तम्बू में भी थे, इसलिए एक भक्त के मन में विचार हुआ कि क्यों न थोड़ा-सा दूध उनके लिए भी ले चला जाए । परन्तु महाराज जी ने उस भक्त के हाथ से गिलास छीन लिया और उसे गंगा जी में फेंक दिया ।

× × ×

महाराज जी का एक भक्त रेलवे में काम करता था । एक दिन वह अपने साथ एक जोड़े को पहली बार महाराज जी के पास लाया । महाराज जी ने अकेले में उस स्त्री से कहा : "तुम एक गरीब दस वर्षीय बालक का पालन कर रही हो । यह तुम बहुत अच्छा कर रही हो ।" जब वह स्त्री कमरे से बाहर निकली तो वह बहुत ही आश्चर्यचकित थी कि उसके सिवाय यह बात कोई नहीं जानता था । यहाँ तक कि उसका पति भी नहीं जानता था कि मेरी पत्नी एक बच्चे का पालन कर रही है ।

× × ×

एक सिपाही एक अपराधी को पकड़े हुए तथा उसे मारते-पीटते हुए किसी बाजार से ले जा रहा था । महाराज जी ने उससे कहा कि ऐसा मत करो ।

उस सिपाही ने महाराज जी को खरी-खोटी सुनाई परन्तु महाराज जी ने उत्तर दिया कि तुम्हें उदारतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए । क्या मालूम की कभी तुम्हारी भी ऐसी स्थिति हो ।

अगले ही दिन वह सिपाही रिश्वत लेने के जुर्म में गिरफ्तार हुआ और हथकड़ी पहने उसी बाजार में से ले जाया गया ।

× × ×

एक फ्रांसीसी आनन्दमयी माँ के आश्रम में ठहरा हुआ था । वहाँ के किसी आश्रमवासी से उसने नीब करौरी बाबा के दर्शनों की बात चलाई । उस आश्रमवासी ने कहा कि यदि आप दस मिनट तक नीब करौरी बाबा का स्मरण करें तो बाबा यहीं उपस्थित हो जाएँगे । उस फ्रांसीसी ने तुरंत अपनी आँखें बन्द कर लीं और 'नीब करौरी बाबा, नीब करौरी बाबा' की जय बोलने लगा । महाराज जी दस ही मिनट बाद अप्रत्याशित रूप से माँ आनन्दमयी के आश्रम में आ पहुँचे । वे उस फ्रांसीसी के समीप गए और उससे पूछा : "तुम मुझे क्यों स्मरण कर रहे हो । लो मैं आ गया हूँ क्या कहना चाहते हो ।"

× × ×

महाराज जी किसी तरफ जा रहे थे कि रास्ते में उन्हें हस्तरेखा देखने वाला एक व्यक्ति दिखाई पड़ा उसने महाराज जी के एक भक्त का हाथ देखकर कहा कि तुम तीन दिन के अन्दर मर जाओगे । यह सुनकर वह भक्त अत्यन्त विक्षुब्ध हो उठा । परन्तु महाराज जी ने कहा : "यह व्यक्ति बहुत चलता पुर्जा है । परन्तु यह मूर्ख स्वयं नहीं जानता कि इसकी मृत्यु तीन दिन के अन्दर होने वाली है ।" और वह तीन दिन के अन्दर सचमुच मर गया ।

× × ×

महाराज जी को उत्तरप्रदेश वन विभाग से एक एकड़ जमीन मंदिर बनवाने के लिए ऋषिकेश में मिली थी । परन्तु महाराज जी के जीवन में यहाँ एक छोटा सा मंदिर और कुटिया ही बन पायी थी । उनके शरीर छोड़ने के ११ वर्ष बाद सिद्धि माता के आदेश पर बाबा के परम भक्त जल निगम के तत्कालीन मुख्य इंजीनियर श्री परीक्षित कुमार चोपड़ा उस भूमि की खोज में देहरादून से अपनी कार द्वारा पत्नी तथा दो पुत्रियों के साथ निकले । माँ ने उन्हें बतलाया था कि जमीन के पास ही डाक्टर की दुकान है । चोपड़ा साहब ऋषिकेश पहुँचे इसी समय किसी राह चलते के कान में चोपड़ा जी की बात पड़ी तो वह उनसे कहने लगा कि चलिए मैं आपको वह जमीन दिखलाता हूँ । वह देखने में गँवार-सा व्यक्ति था । कंबल ओढ़े हुए था और बीड़ी पी रहा था । चोपड़ा जी ने उसे अपनी कार में बैठाया और जिस तरफ उसने इशारा किया था वहाँ कुछ

ही क्षणों में कार जा पहुँची । उस व्यक्ति ने कार में बैठे-बैठे बताया कि यह जमीन बाबा जी ने ली थी । एक स्थानीय व्यक्ति ने उस जमीन पर कब्जा कर रखा था । और उसका उपयोग खेती-बाड़ी हेतु निजी रूप से कर रहा था । जैसे ही कार भूमि के गेट के पास पहुँची तो चोपड़ा जी, उनकी पत्नी तथा दोनों पुत्रियाँ कार से उतरे । क्या देखते हैं कि जो व्यक्ति ड्राईवर के पास बैठा था कहीं नहीं है । वह आदमी कब उतरा और कहाँ चला गया जबकि वहाँ खुली जगह थी तथा सुनसान सड़क भी थी । चोपड़ा जी को वह आदमी चारो तरफ देखने पर भी दिखाई नहीं दिया । चोपड़ा परिवार अवाक् रह गया । उन लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि महाराज जी स्वयं मार्ग निर्देश करने आए थे और हम उन्हें पहचान भी न पाए । फिर बड़ी मुश्किल से उस जमीन पर कब्जा प्राप्त किया गया और १० जुलाई १९८४ को हनुमान जी के मंदिर का पुनरुद्धार हुआ ।

× × ×

जिस कम्पाउन्डर ने उस जमीन पर कब्जा कर रखा था और निजी कार्य हेतु भूमि का प्रयोग कर रहा था उसने कब्जा छोड़ने के लिए २०,००० रुपए की मांग की । तब चोपड़ा जी ने स्वयं ११०० रुपये देने की बात की । वहाँ उपस्थित महाराज जी के परम भक्त जी०पी० घिलडियाल ए०डी०एम० मुज़फरनगर, श्री शंकर दत्त जोशी चीफ एक्जिक्यूटिव आफिसर बद्रीनाथ मंदिर तथा ऋषिकेश के प्रतिष्ठित व्यापारी सुभाष अरोड़ा ने भी ग्यारह-ग्यारह सौ देने की बात कही इस प्रकार ४,४०० रुपये इकट्ठे हो गए । वहाँ उपस्थित एक व्यक्ति ने कहा कि शेष १५,००० रुपये मैं देता हूँ । उसने चेक भी काट दिया । दिनांक ८/७/८४ को यह लिखा-पढ़ी हुई कि २०,००० रुपये उसे इतने दिन चौकीदारी के लिए दिये जा रहे हैं । दि० १०/७/८४ को अर्थात् तीसरे दिन वहाँ हनुमान जी की बड़ी मूर्ति स्थापित करने का निश्चय हुआ । संयोग समझिए कि कम्पाउन्डर चैक भुनाने बैंक में गया तो चैक बैंक ने लौटा दिया क्योंकि खाते में धन नहीं था । चैक देने वाले व्यक्ति संयोग वश उस समय मंदिर प्रांगण में उस समय उपस्थित थे । उन्होंने कहा कि रुपया खाते में एक दो दिन में आ जाएगा । परन्तु वह चैक भुना नहीं । बाद में उस कम्पाउन्डर को नकद भुगतान १५,००० रुपये अवश्य कर दिया गया । लगता था कि चैक की बात तात्कालिक व्यवस्था के लिए दैवयोग से बाबा जी द्वारा ही कराई गई थी ।

× × ×

बरेली की बात है महाराज जी ने अपने एक भक्त को सुबह छह बजे रेलवे स्टेशन पर मिलने के लिए कहा । उन दिनों बरेली में भयानक बाढ़ आई थी । इसलिए उस भक्त के मन में यह बात आई कि शायद महाराज न आएँ । परन्तु फिर भी उन्होंने स्टेशन पर जाने का निश्चय किया । महाराज जी आए और उन्होंने आते ही कहा कि तुम सोच रहे थे कि बाढ़ के कारण मैं यहाँ नहीं पहुँच पाऊँगा ।

× × ×

एक विदेशी महिला जब महाराज जी के दर्शन करके अपने देश लौटीं तो उसकी माता ने उससे महाराज जी के संबंध में अपने अनुभव बतलाने के लिए कहा ।

वह कहने लगी मैं अनुभव करती हूँ कि अब मेरी भी कुछ 'हैसियत' है । मैं वस्तुतः इस शब्द से नफरत करती हूँ परन्तु लगता है कि यह मुझ पर अब लागू होता है । मैं माता थी और माता के नाते महाराज जी ने मुझे विशेष सम्मान दिया । मुझे ऐसा सम्मान आज तक किसी से नहीं मिला और अमेरिका में तो खास तौर पर नहीं मिला । मुझे तो सचमुच अविस्मरणीय अनुभव हुआ ।

× × ×

महाराज जी बिहारी जी के मंदिर में गए और पीछे के द्वार से बाहर निकले । उसी समय गली में कोई चिल्ला रहा था— एक रोटी दे दो । महाराज जी ने उसे अपनी ओर बुलाया । वह साधु था जो प्रति दिन भिक्षा में दो ही रोटी ग्रहण कर अपना निर्वाह करता था । महाराज जी ने उससे पूछा कि तुम्हारी रोटी कहाँ है ? महाराज जी ने उससे रोटी ली और खा भी ली । महाराज जी ने कहा कि वह व्यक्ति इराकी था और चालीस वर्ष पहले वृंदावन में आया था । परन्तु वहाँ जो भक्त उपस्थित खड़े थे उन्हें वह साधु इस संसार का नहीं दिखाई पड़ रहा था ।

× × ×

कैंची की बात है । आधी रात को महाराज जी उठे और उन्होंने भक्तों को भी जगाया । उस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी । महाराज जी ने कहा कि यहाँ से आधा किलोमिटर दूर ऊपर की तरफ एक जीप खराब हो गई है इसलिए उसमें बैठे यात्रियों के लिए चाय बनाकर जल्दी से ले जाओ । चाय बनाई गई और भक्त दौड़ते हुए वहाँ जा पहुँचे । चार स्त्रियाँ और एक पुरुष था । उन्हें चाय पिलाई गई । महाराज जी ने कुछ भक्तों को पीछे यह कहते

हुए और चाय लेकर भेजा कि वह चाय तो ठंडी हो गई होगी । जब उन लोगों को मंदिर में लाया गया तो महाराज जी ने कहा कि इन महिला भक्तों के यहाँ मैं आज से तीस बरस पहले जाया करता था । ये लोग बहुत अच्छे हैं । उन्होंने मुझे कंबल भी दिया था । महाराज जी ने उन्हें कंबल दिए । वे महिलाएँ भी महाराज जी को पहले से जानती थीं ।

× × ×

१९६९ में रिचर्ड ने अमेरिका से एक व्यक्ति को पत्र लिखा और पूछा कि क्या मैं महाराज जी को कुछ रुपया भेज दूँ । उत्तर में उसे जो महाराज जी का संदेश मिला वह इस प्रकार था । "हमें रुपया नहीं चाहिए भारत सोने की चिड़िया है । हम लोगों ने देना सीखा है लेना नहीं । हम लोग ईश्वर को तब तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक हमारी कंचन कामिनी इन दोनों में आसक्ति है । एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं । हम जितना ही अधिक त्याग करेंगे उतना ही अधिक प्राप्त करेंगे ।"

× × ×

एक बार महाराज जी ने एक भक्त को साँप काटने से बचाया था । वह भक्त उन दिनों हलद्वानी में एक छोटे से कमरे में रहता था । एक दिन वह उसी कमरे में किसी से बात कर रहा था कि एकाएक आधा वाक्य कह कर ही रुक गया । जब उसने घूमकर देखा तो एक नाग कमरे में प्रविष्ट हुआ और कमरे में पड़े बोरे के नीचे जा बैठा । उस भक्त के मन में आया कि महाराज जी न जानें ऐसा क्यों कर रहे हैं । वह साँप भी देखने में जहरीला था । भक्त ने बड़ी सावधानी से उस साँप को कनस्तर में डाला और उसे बाहर ले जाकर छोड़ आया । कोई दो वर्ष बाद उस भक्त ने महाराज जी से कहा कि आप मेरी सहायता या एक प्रकार से रक्षा नहीं कर रहे । मुझे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ रहा है ।

इस पर महाराज जी ने कहा : "क्यों एक बार मैंने तुम्हारी जान नहीं बचाई थी । साँप से रक्षा की थी ।" वह भक्त यह बात अच्छी तरह जानता था कि महाराज जी ने उस दिन मेरी रक्षा साँप से की थी । वह यह भी समझता था कि ऐसी घटनाओं को आकास्मिक कहकर टाला नहीं जा सकता ।

× × ×

एक दिन महाराज जी ने ड्राईवर से भीमताल चलने को कहा। यह स्थान बदरीनाथ के रास्ते में है । भीमताल पहुँचने पर महाराज जी अपने एक भक्त

के निवास पर गए । वहाँ पर जो भक्त इकट्ठे हुए थे उनसे महाराज जी ने कहा कि शिव मंदिर के पास एक सुनसान कोठरी है वहाँ जो भी हो उसे ले आओ । कुछ भक्त वहाँ गए । दरवाजा बन्द था काफी देर तक वे दरवाजा खटखटाते रहे । दरवाजा नहीं खुला । वे वापस लौट आए । महाराज जी वहाँ से उठकर दूसरे भक्त के यहाँ गए । और उन्हें भी शिव मंदिर भेजा । और कहा कि वहाँ से खाली हाथ न आएँ । तब वे लोग वहाँ गए । घंटों पुकारने-चिल्लाने तथा दरवाजा खटखटाने के बाद खिड़की से एक वृद्ध झाँका और उसने इन लोगों को वापस चले जाने को कहा । जब ये लोग नहीं माने तब उसने दरवाजा खोला । वे पति और पत्नी दो थे । उन्हें महाराज जी के पास लाया गया । महाराज जी ने उन्हें देखते ही कहा कि क्या आप लोग भूखों मर कर ईश्वर को धमकी देना चाहते हैं ? वह अपने भक्तों को इतनी सरलता से मरने नहीं देता। फिर उन्हें महाराज जी ने पूरी-तरकारी प्रसाद रूप में दी । महाराज जी के पुनः आग्रह करने पर उन्होंने प्रसाद पाया ।

यह दम्पती मद्रास से बदरीनाथ आया था । सब कुछ चोरी चले जाने पर उन लोगों ने भीख माँगने से प्राण त्याग करना ही श्रेष्ठ समझा था । इस उद्देश्य से वे कई दिन से उस कोठरी में भूखे-प्यासे बैठे थे ।

फिर महाराज जी ने उन्हें यह कहकर कुछ धन दिया कि घर पहुँचकर लौटा दीजिएगा । इस प्रकार वे दोनों अपने घर चले गए ।

× × ×

एक दिन महाराज जी भक्तों के बीच में बैठे हुए थे कि एकाएक चिल्लाने लगे कि मुझे भूख लगी है, मुझे माँ खिलाएगी । फिर वे वहाँ से उठ खड़े हुए और माँ आनन्दमयी के आश्रम की ओर चल पड़े । रास्ते भर यही माला जपते रहे कि माँ खिलाएगी, माँ खिलाएगी । जब आश्रम पहुँचे तो सीधे माँ के कमरे में प्रविष्ट हो गए और एक तार रट लगाए रहे : माँ मुझे भूख लगी है । इस पर माँ खिला-खिलाकर हँस पड़ीं । तत्काल उन्होंने महाराज जी के लिए तगड़ा भोजन मँगवाया । फिर दोनों ने मिलकर वह भोजन भक्तों में बाँट दिया ।

× × ×

आगरा से एक अधिकारी महाराज जी के दर्शनों के लिए कैंची आया था । उसे कैंची से ही कलकत्ता जाना था । महाराज जी ने उससे कहा कि आज मत जाओ । उस अधिकारी को उसी दिन कलकत्ता जाना जरूरी था । तो भी महाराज जी ने हठ किया कि आज मत जाओ । वह अधिकारी कुछ भुनभुनाया तो पर उसने यात्रा अवश्य स्थगित कर दी ।

दूसरे दिन समाचारपत्रों में भयानक ट्रेन दुर्घटना का विवरण छपा । दुर्घटना-ग्रस्त गाड़ी वही थी जिस पर वह अधिकारी सवार होने को था ।

× × ×

एक दिन एक दरोगा महाराज जी के दर्शनों के लिए आया । उससे महाराज जी ने कहा तुम बेकार दरोगा हो । हमारे भूमियाधार आश्रम में एक व्यक्ति ने बिना लाइसेंस की पिस्तौल रखी है । तुम उसे पकड़ते क्यों नहीं ।

पिस्तौल-धारी व्यक्ति महाराज जी का परम भक्त था और अपना घर-द्वार छोड़कर उनकी सेवा में लगा था । महाराज जी ने ही उसे भूमियाधार आश्रम का सेवाकार्य सौंप रखा था । वह भक्त प्रतिदिन भूमियाधार से कैंची महाराज जी के दर्शन करने जाया करता था ।

दरोगा भूमियाधार पहुँचा । महाराज जी का वह भक्त एक झोला लिए आश्रम से निकल रहा था । दरोगा ने उसकी तलाशी ली । उस झोले में एक खाली डिब्बा था । और कुछ फूल मालाएँ । मिठाई का डिब्बा दरोगा ने बिना खोले ही झोले में रख दिया । आश्रम में रखे उसके सामान की भी तलाशी ली पर पिस्तौल नहीं मिली । वह भक्त जब कैंची महाराज जी के आश्रम में पहुँचा तो महाराज जी ने कहा : "आज तुझे बचा दिया है, पिस्तौल थाने में जमा कर आ, नहीं तो कठिनाई में पड़ जाएगा ।"

फिर उसी दिन उस ने पिस्तौल थाने में जमा कर दी । वह भक्त पिस्तौल सदा अपने पास रखता था । उस दिन भी मिठाई के डिब्बे में उसने पिस्तौल रखी हुई थी ।

× × ×

उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव सोसाइटीज के रजिस्ट्रार श्री इफ्तिखार हुसैन भी महाराज जी के दर्शनों के लिए समय-समय पर आया करते थे । श्रद्धा तो उनकी बाबा पर अधिक थी फिर भी उनके मन में बाबा की शक्ति की परीक्षा का विचार बना ही रहा । वे जब भी महाराज जी के दर्शन करने जाते थे तो उन्हें प्रसाद के रूप में पूरी-तरकारी मिलती थी । एक बार जब वे महाराज जी के दर्शन करने जा रहे थे तो उनके मन में आया कि "बाबा अंतर्यामी हैं । मेरे मन में आज हलुआ खाने की इच्छा है । बाबा यदि हलुआ आज प्रसाद के रूप में दें तो मान लेंगे कि वे सचमुच पहुँचे हुए फकीर हैं ।" फिर वे आश्रम पहुँचे, महाराज जी को प्रणाम किया । तब महाराज जी ने आदेश दिया कि इन्हें हलुआ खिलाया जाए । सच तो यह है कि महाराज जी उनके मन

की पहले ही जान गये थे और उनके आने से पहले ही हलुआ बनाने का आदेश दे चुके थे ।

× × ×

महाराज जी लखनऊ में अपने एक भक्त के यहाँ ठहरे थे और वहाँ भक्तों का जमघट लगा था । घर का सेवक भी एक रुपया टेंट में रखकर उनके दर्शनों के लिए वहाँ पहुँचा । जब उसने प्रणाम किया तो महाराज जी ने कहा : "अपनी कमर में खोसकर मेरे लिए रुपया लाया है ।" उसने हामी भरी । महाराज जी ने कहा : "तो मुझे देता क्यों नहीं ।" उसने रुपया निकालकर दिया और महाराज जी ने उसे अत्यन्त प्रेमपूर्वक ग्रहण किया और बाद में अपने भक्तों से कहा इसका एक रुपया आपके बीस हजार से अधिक मूल्यवान है ।

× × ×

एक अँधेरी रात में एक भक्त महाराज जी के साथ जंगल में थे । उस ने कहा कि महाराज जी मुझे ईश्वर दिखलाएँ ।

महाराज जी ने उस से कहा जरा मेरा पेट मलो । वह भक्त पेट मलने लगा । उसे प्रतीत होने लगा कि पेट बराबर बढ़ता ही जा रहा है । अंत में उसे पहाड़ सा प्रतीत होने लगा । महाराज जी खर्राटे भी भरने लगे । उनके खर्राटे का शब्द सिंहनाद के समान था । उस भक्त का कहना है कि यह क्रीड़ा मात्र थी परन्तु यदि उनकी कोई परीक्षा लेना चाहे तो वे ऐसा कुछ नहीं दिखाते ।

× × ×

जेल का एक बूढ़ा कर्मचारी अत्यधिक बीमार पड़ गया । डाक्टर ने कहा कि यह अधिक से अधिक २४ घंटे ही जीवित रह सकता है । परन्तु उस बूढ़े कर्मचारी को याद है कि महाराज जी ने उस पर कृपा की और उसे मरने नहीं दिया । तीसरे दिन महाराज जी उस नगर में आए और एक भक्त के यहाँ पधारे । उन्होंने कहा कि यहाँ आस-पास एक बूढ़ा व्यक्ति रहता है वह मेरे बारे में बहुत सोचता रहता है । आज-कल वह बीमार है । उसे देखने चलना है ।

जब महाराज जी उस बीमार के घर गए तो क्या देखते हैं कि उसकी हालत बहुत बिगड़ी हुई है । महाराज जी ने अपना चरण उस बीमार के सिर के पास रखा । उस रोगी ने महाराज जी को प्रणाम किया और तत्काल अपना शरीर त्याग दिया ।

बाद में महाराज जी ने अपने एक भक्त से कहा वह मुझे बहुत याद करता था । बस दर्शन दिए नहीं कि वह चल बसा ।

●

अंतिम लीला

महाराज जी के निधन के उपरान्त उनके शरीर को आश्रम के बरामदे में बर्फ की सिल्लियों पर रखा गया था । शाम को कार के ऊपर उनका शरीर रख कर वृन्दावन की गलियों में घुमाया गया । हजारों लोगों ने बैन्ड-बाजे और बत्तियों सें सुसज्जित उस जुलूस के देखा । रात में ६ बजे मंदिर के आँगन में बनी चिता पर महाराज जी का शरीर रख दिया गया ।

१२ दिसम्बर, १९७३ को वृदांवन के एक स्थानीय समाचार पत्र में जो समाचार छपा था वह इस प्रकार था :

"प्रसिद्ध चमत्कारी नीब करौरी के संत का पार्थिव शरीर हनुमान मंदिर के सामने वाले उनके प्रवास के प्रांगण में वैदिक रीति से अग्नि को समर्पित किया गया ।

"आगरा से नैनीताल जाते हुए वे एकाएक बीमार पड़ गये और कुछ देर बाद उनका हार्ट फेल हो गया ।

"अग्निदाह से पहले उनकी शव यात्रा जुलूस के रूप में निकली । सजी हुई गाड़ी में उनके शरीर को रखा गया था । चिता कहाँ सजाई जाए इसका निश्चय पागल बाबा श्री लीलानंद ठाकुर ने किया । उन्होंने यह भी कहा कि वृन्दावन से अच्छा कोई और स्थान हो भी नहीं सकता । कैंची से सिद्धि माँ आईं और उन्होंने कहा कि अग्नि-संस्कार या तो कैंची में हो या फिर हरिद्वार में । चिता सुबह तीन बजे तक जलती रही । तब तक काफी संख्या में उनके भक्त अपनी अंतिम श्रंद्धाजलि देने के लिए वहाँ पहुँच चुके थे । भक्त लोग बराबर आते ही जा रहे थे । आश्रम शोकमय था ।

अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ० शंकरदयाल शर्मा सुबह छः बजे वहाँ पहुँचे थे और काफी देर उस चिता-भूमि के पास बैठे रहे । वे १९५७ से महाराज जी के श्रद्धालु रहे हैं । उन्होंने आश्रमवासियों से महाराज जी के जीवन तथा क्रियाकलापों-संबंधी विवरणों को एकत्र करने के लिए कहा । एक समिति भी गठित कि गई । २२ सितम्बर को भंडारे का आयोजन किया गया । राख

को यमुना में नहीं छोड़ा गया । उसे उनके समाधि-स्थल में गाड़ने तथा उसका कुछ अंश तीर्थ स्थानों में प्रवाहित करने का निश्चय किया गया ।

वृन्दावन के निवासी महाराज जी के सदा विरुद्ध रहे । उन्हें वे चमत्कारी बाबा कह कर पुकारते थे ।

जब उनके अमरीकी भक्तों को उनकी मृत्यु का समाचार मिला तो बहुत ट्रंककाल आए ।

बड़े-बड़े अधिकारी भी वृन्दावन में महाराज जी को श्रद्धांजलि देने के लिए पहुँचे थे ।

रिचर्ड (रामदास) तथा अन्य विदेशी भक्त जब तक अमेरिका, युरोप आदि से वहाँ पहुँचते सैकड़ों भारतीय भक्त वहाँ पहुँच चुके थे । प्रेम और उदारता विस्मयकारी थी । पहाड़ी और मैदानी तथा पूर्व और पश्चिम के लोगों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रह गया था । पारस्परिक ईर्ष्या तथा वैमनस्य के भाव भी तिरोहित हो चुके थे । सभी व्यक्ति अपनी क्षति की अनुभूति कर रहे थे । और सब को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमें इस धरती पर ईश्वर के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

भारतीयों की ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के ग्यारह दिन के बाद आत्मा सब सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाती है । ग्यारहवें दिन भंडारे का आयोजन किया गया ।

पूरे आँगन में शामियाने लगाए गए । एक ओर ऊँचा चबूतरा बनाया गया । चबूतरे में एक हवनकुण्ड बनाया गया । जैसे ही हवनकुण्ड को अग्नि दिखाई गई स्वच्छ नीले आकाश में पूरब की ओर से काली घटा उठ खड़ी हुई । हवा इतनी तेज चलने लगी थी कि शामियाने फड़फड़ाने लगे । उस समय रिचर्ड के मन में विचार उत्पन्न हुआ "महाराज जी यदि यह आपका संकेत है तो यह यथेष्ट नहीं ।" रिचर्ड सोच रहे थे कि महाराज जी यदि आ ही रहे हैं तो इस रूप में आएँ कि उनके पूर्ण दर्शन हों ।

बादल तेजी से आगे बढ़ रहे थे और हवा भी अधिक तेज होती चली जा रही थी । फिर उसने अंधड़-तूफान का रूप धारण कर लिया । तंबू तार-तार होने लगे, लकड़ी की बल्लियाँ भी टूट-टूटकर गिरने लगीं और हवनकुंड की अग्नि की लपटे बहुत ऊँची उठने लगीं । वातावरण ने ऐसा भयानक रूप ले लिया कि लोग कभी उठते कभी गिरते तो कभी एक दूसरे के गले लगाते थे और कभी रोते थे । बहुत जल्दी ही उस घटना को महाराज जी का आशीर्वाद समझा जाने लगा । जैसे ही तूफान शांत हुआ और स्थिति कुछ संभली तो

भावविह्वल रिचर्ड वहाँ से दौड़े हुए पिछवाड़े के एक कमरे में जा घुसे । वे वहाँ क्यों गये थे इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था । उस कमरे मे श्रीमती माली स्काट सोई हुई थीं । वे कुछ देर पहले अमेरिका से आई थीं । उन्हें महाराज जी के दर्शन का कभी सौभाग्य नहीं मिला था । रिचर्ड के फूटकर रो उठने के फलस्वरूप श्रीमती स्काट की नींद खुल गई । बाद में श्रीमती स्काट ने रिचर्ड को बताया कि जब मेरी नींद खुली थी तब उस समय मेरे हृदय में सुर ताल से एक गीत बज रहा था । उस गीत का भावार्थ इस प्रकार का है :

मृत्यु कोई चीज नहीं ,
मुझे लगता है कि मैं, तुम में खोई हूँ ,
और तुम मुझ में,
मैं तुम से कभी अलग नहीं होऊँगी
मेरे मन में, मेरे मस्तिष्क में
फूलों में, बच्चों में, वर्षा में
तुम्हारा नया जन्म हो रहा है ।

यह गीत उस तूफान की देन थी । रिचर्ड का कथन था कि महाराज जी मृत्यु के बारे में प्रायः जो कुछ कहा करते थे वही सब-कुछ गीत के रूप में परिणत हुआ था । जब तक समय नहीं आता तब तक कोई मरता नहीं । ईश्वर के प्यार को छोड़कर हर चीज अप्रासंगिक है ।

महाराज जी कहा करते थे कि शरीर को जला दिया जाना चाहिए । ऐसा करने से आत्मा की फिर से शरीर धारण करने की लालसा क्षीण हो जाती है ।

रिचर्ड (रामदास) का कथन है कि महाराज जी हमें एक तरफ से जड़ीभूत कर रहे थे । वे उसी दिन शाम को ६ बजे वृन्दावन पहुँचे थे जब लोग महाराज जी की अरथी लेकर वापस लौट रहे थे । महाराज जी का शरीर कार की छत पर रखा हुआ था । फिर उसे उतार कर चौतरे पर सब के दर्शनों के लिए रखा गया । सभी लोगों ने महाराज जी के चरणों को स्पर्श किया । रिचर्ड ने भी प्रणाम किया था । रिचर्ड का मत था कि उस समय ऐसा अनुभव हो रहा था कि कुछ लुप्त हो गया है परन्तु वस्तुतः कुछ भी बदला नहीं था । उनका मुख मंडल वैसे ही चमक रहा था ।

रिचर्ड को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महाराज जी ही जड़ी भूत कर रहे हैं । हम सभी दुःखी थे तथा दुःख से किसी को वास्तविकता का बोध नहीं हो रहा था । परन्तु यह तथ्य शीघ्र ही सामने आया कि महाराज जी अब भी हमारे

साथ हैं भले ही उनका शरीर हम से दूर चला गया है । एक बात जो विशेष उल्लेखनीय है वह यह कि उस समय तो यह भी विश्वास नहीं हो रहा था कि महाराज जी अब हम लोगों के बीच नहीं हैं ।

एक भक्त रात भर महाराज जी की चिता के पास ही बैठा रहा और जोर जोर से श्रीराम, जयराम, करता रहा । उसने कहा कि मैंने महाराज जी को चिता के ऊपर बैठे देखा था और उनके एक ओर भगवान राम और दूसरी ओर भगवान शिव विराजमान थे । वे सिर पर खीर उड़ेल रहे थे जिससे अच्छी तरह जल जाएँ । ऊपर से देवता उन पर फूल भी बरसा रहे थे । सभी प्रसन्न थे ।

राजस्थान का एक भक्त महाराज जी के दर्शनों के लिए कैंची आया । जब उसे बतलाया गया कि महाराज जी चोला छोड़ चुके हैं तो उसे विश्वास न हुआ । उसने कहा अभी तीन महीने पहले मेरी कन्या का विवाह हुआ था । उसमें महाराज जी स्वयं पधारे थे तथा उन्होंने ही विवाह का सारा प्रबंध भी किया था ।

महाराज जी द्वारा महासमाधि ले लेने के उपरान्त एक महिला भक्त आश्रम में ठहरी हुई थीं । वे सुबह तीन बजे उठीं । वे जैसे ही महाराज जी की समाधि के पास पहुँचीं ते क्या देखती हैं कि वहाँ महाराज जी स्वयं खड़े हैं । उनका विशाल रूप था । वे आनन्द-विभोर हो उठीं और दौड़ी-दौड़ी कमरे की ओर कुमकुम लाने के लिए बढ़ी जिससे महाराज जी को तिलक कर सके ।

महाराज जी की महासमाधि के उपरान्त इलाहाबाद की एक महिला भक्त के मन में उनके दर्शनों की कामना जाग्रत हुई । वे उन दिनों अपने पति के साथ हरिद्वार में थीं तथा शय्याग्रस्त थीं । वे एकाएक उठकर अपनी चारपाई पर बैठ गईं और ऊलजलूल बकने लगीं "कि महाराज जी आ गए हैं वें वहाँ हैं", वे महिला अत्यधिक भयभीत सी थीं, फिर कहने लगीं कि "महाराज जी मुझ पर हँसे और पूछने लगे कि तुम इतनी भयभीत क्यों हो । क्या तुम मेरे पाँव छूना चाहती हो और पहले की तरह मेरे शरीर की मालिश करना चाहती हो ।"

१९७६ में एक भक्त आश्रम में आए । वे महाराज जी के कमरे में जाना चाहते थे परन्तु वहाँ के रक्षकों ने उन्हें अन्दर नहीं जाने दिया । वे इधर-उधर ताली ढूँढ़ने लगे कि इतने में उन्हें महाराज जी की वाणी सुनाई पड़ी : यह सब क्यों हो रहा है । यह तरीका नहीं है, ताली यह है । ये द्वार खोलेंगे ।

महाराज जी द्वारा महासमाधि लेने के एक वर्ष बाद की बात है । श्रीमती इन्दिरा अपनी माता की पुण्यतिथि के दिन आश्रम में आई हुई थीं । वे सुबह

से शाम तक वहाँ रुकी रहीं तथा उन्होंने महाराज जी के अनेक किस्से भी सुनाए । उन्होंने बताया कि जब मैं बीमार थी तो महाराज जी ने मुझे एक फूल दिया था और जब मैं अच्छी हुई तो फूल एकाएक अन्तर्धान हो गया । उन्होंने यह भी बताया कि मेरे बच्चों का नामकरण महाराज जी ने कैसे कैसे किया । प्रातःकाल बातचीत के सिलसिले में उन्होंने यह प्रश्न किया था : "महाराज जी का विशाल रूप देख लेने के बाद भी क्या कोई जीवित रह सकता है ?" सायंकाल वे अन्य माताओं के साथ महाराज जी के कमरे में बैठी हुई थीं कि सहसा वे महाराज जी के तख्त की ओर उन्मुख होकर उन्हें प्रणाम करने के उद्देश्य से दंडवत् लेट गईं और उन्होंने तत्क्षण वहीं प्राण त्याग दिए । उनकी उँगलियाँ उस समय माला फेरने की सी मुद्रा में थीं ।

महाराज जी के निधन के उपरांत एक परिवार कार से कैंची आश्रम के आगे से निकल रहा था कि सहसा कार बिगड़ गई । रात को आश्रम में ठहरने के लिए उन्होंने अनुमति चाही । इसी समय आश्रम में चर्चा हो रही थी कि समाधि बनाने के लिए रुपया कहाँ से आये । सारी रात वह व्यक्ति इस बात के लिए छटपटाता रहा कि मुझे इस मंदिर के लिए कुछ करना चाहिए । दिन चढ़ने पर उसने भूमि के लिए आवश्यक धनराशि आश्रम को दे दी ।

●

मंदिरों तथा आश्रमों की स्थापना

महाराज जी हनुमान जी के अनन्य भक्त थे इसलिए उन्होंने विशेष रूप से हनुमान मंदिरों के निर्माण अनेक स्थानों पर करवाये । वैसे अनेक स्थलों पर हनुमान जी के विग्रह के साथ-साथ शिवलिंग, विष्णु, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, वैष्णवी देवी आदि के विग्रह भी उन्होंने स्थापित कराये ।

१. सर्वप्रथम महाराज जी ने गुजरात में बाबानियाँ के वासकाल में तालाब के किनारे हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की थी । अब वहां मंदिर बन चुका है ।

२. नीब करौरी गाँव में महाराज जी ने हनुमान जी का मंदिर बनवाया था । मंदिर के पास ही एक कुआँ भी बनवाया था ।

३. उत्तर प्रदेश के कुमाँऊ तथा गढवाल मंडलों में अनेक स्थानों पर जैसे हनुमान गढ़ी भूमियाधार, कैंची, पौड़ी, गेठिया, काठगोदाम, हल्दवानी, काकड़ी घाट पिथौरागढ़ आदि में हनुमान मंदिर बनवाए । कैंची और भूमियाधार के मंदिर अत्यंत भव्य हैं । उक्त सभी मंदिर १९६२ के बाद बने हैं ।

४. १९६४ में कानपुर पंकी में हनुमान मंदिर बना ।

५. शिमला में संकटमोचन मंदिर १९६६ में बना ।

६. १९६७ में लखनऊ में श्री हनुमान मंदिर बनवाया ।

७. १९६८ में वृंदावन में हनुमान जी की संगमरमर की विशाल मूर्ति स्थापित कराई गई । यहाँ दुमंजिली विशाल धर्मशाला भी बनवाई । इसी आश्रम में महाराज जी की चिता जली थी । यहीं १९८१ को उनकी मूर्ति भी स्थापित की गई है ।

८. दिल्ली में महरौली के निकट जौनापुर गाँव में १९७१ में हनुमान मंदिर की स्थापना हुई । १९८३ में यहाँ देवी का विग्रह भी स्थापित किया गया । यह आश्रम ३० एकड़ भूमि पर फैला हुआ है । यहाँ बहुत बड़ी गोशाला भी है ।

महाराज जी के चोला छोड़ने के बाद भी हनुमान मंदिर के निर्माण का कार्य उनके भक्तों ने जारी रखा । इनमें से प्रमुख हैं—

१. नेपाल की सीमा पर धारचुला में १९७८ को हनुमान जी का मंदिर बना । इस मंदिर के बनने के बाद यहाँ कुछ देर विश्राम करके यात्री मानसरोवर जाते हैं ।

२. धारचुला से भी कुछ आगे ठीक सीमा पर जिप्ती गाँव में हनुमान मंदिर की स्थापना १९८८ में हुई । कहते हैं इस मंदिर की नींव एक मुस्लमान सैनिक ने रखी थी और एक अन्य ईसाई सैनिक ने इसे बनवाया । जिस मूर्ति की यहाँ प्रतिष्ठा हुई थी, वह कैंची आश्रम से आई थी ।

३. १९७८ में महाराज जी के भक्तों ने अमेरिका के राओस नगर में बाबा नीब करौरी आश्रम की स्थापना की और हनुमान जी का विग्रह स्थापित किया ।

४. १९८४ में तमिलनाडु में मद्रास से कोई ३२ किलोमीटर की दूरी पर वीरापुरम् में महाराज जी के एक भक्त श्री हुकुमचन्द ने इस मंदिर को बनवाया था । वहाँ महाराज जी के विग्रह के साथ-साथ सुब्रहमण्यम् स्वामी का भी विग्रह स्थापित है ।

५. १९८४ में पिथौरागढ़ जिले में गर्जिला ग्राम में हनुमान मंदिर की स्थापना हुई ।

६. १९८४ में ऋषिकेश हनुमान मंदिर का पुनरुद्धार किया गया ।

७. १९८५ में बद्रीनाथ में बाबा नीव करौली आश्रम की स्थापना हुई ।

●

मनीषी, संत, महात्मा

शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*
करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवन्त शाह*
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवन्त शाह*
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग	*बच्चन सिंह*
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह*
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति)	*हरिश्चन्द्र मिश्र*
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग, भाग 1-2	*पं० गोपीनाथ कविराज*
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग, भाग 3	*पं० गोपीनाथ कविराज*
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नन्दलाल गुप्त*
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy	*Nand Lal Gupta*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	*म०म०पं० गोपीनाथ कविराज*
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree	*Dr. Ashok Kumar Chatterjee*
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी (पौत्र : महायोगी लाहिड़ी महाशय)	*शिवनारायण लाल*
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ० अर्जुन तिवारी*
भारत के महान योगी, भाग 1-10 (5 जिल्द में)	*विश्वनाथ मुखर्जी*
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे*
पूर्वांचल के संत-महात्मा	

Library IIAS, Shimla
H 294.572 K 143 N
00115215

विश्वविद्यालय प्रकाशन
विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी - 221 001

ISBN : 81-7124-110-7 मूल्य : बीस रुपये